मैथिलीक वरिष्ठ रचनाकार कीर्त्तिनारायण मिश्रक ई चारिम कविता-संग्रह थिकनि। अपन पहिले काव्य-संग्रहसँ मैथिली काव्य-जगतमे सर्वथा बेछप कविताक कारणे ओ सदैव चर्चित रहलाह अछि। मैथिली कविता हिनक कविता लग आबि अपन उत्कर्षकेँ स्पर्श करैत अछि आ नव भाव-बोध, नव शिल्प-सौष्ठव, नव प्रतीक-योजना, नव उपमान-उपमेय आ अभिव्यक्तिक नव प्रणालीक कारणे अपन फराक अस्तित्वक स्थापना करैत अछि।

आधुनिक जीवनक विडम्बना-विद्रूप, जीवनक आपाधापी, जीवन पर आयल उपभोक्तावादक तेज खतरा आ तकर जबरदस्त हस्तक्षेपकेँ अपन कवितामे ओ अत्यन्त सतर्कतापूर्वक अभिव्यक्त करैत छथि। आम मनुक्खक बेहतरीक लेल हुनक कविता सार्थक चिन्ता आ विमर्श करैत अछि। ई चिन्ता आ विमर्श सदति हुनक चिन्तनमे रहैत छनि।

कीर्त्तिनारायण मिश्रक कवितामे मनक भीतरक तान-वितान, अन्तर्द्वन्द्व, मुक्तिक बेचैनी, सत्य-सुन्दरक आकांक्षा सँ भरल छटपटाइत चेतनाक एकटा प्रबल वेग, एकटा तेज प्रवाहक रूपमे रेखांकित कयल जा सकैत अछि। स्वानुभूतकेँ निज भाषा-शैलीमे एकटा पूर्ण आ परिचित परिसरमे निजता विस्तारित करैत अपन सार्थक उपस्थिति घोषित करैत अछि हुनक कविता।

पुस्तक प्राप्तिस्थान

- कीर्त्तिनारायण मिश्र
  सौभद्र निवास
  शोकहरा, बरौनी-851112
  दूरभाष : 06279-232659
- शरदिन्दु चौधरी
  शेखर प्रकाशन
  इन्द्रपुरी, पटना-800024
  दूरभाष : 0612-3102305
- श्री केदार कानन
  किसुन कुटीर, सुपौल-852131
  दूरभाष : 06473-223739
- प्रो. डा. विश्वनाथ
  सोमनाथ निकेतन
  शुभंकरपुर, दरभंगा - 846006
  दूरभाष : 06272-253979,254366
- श्री राजनन्दन लाल दास
  6/28 ए.सी.आई.टी. बिल्डिंग
  16, बागमारी लेन
  कोलकाता-700054
  दूरभाष : 033-23349371

स्वत्वाधिकार : कीर्त्तिनारायण मिश्र
मुखपृष्ठ : सुस्मिता पाठक
प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक ,किसुन कुटीर सुपौल-852131, बिहार
प्रथम! संस्करण : फरवरी, 2004
सहयोग राशि : 50/-टाका (साधारण संस्करण)
100/-टाका (सजिल्द संस्करण)
मुद्रक : शिवांजलि प्रेस, सुपौल

AADMI KEN JOHAIT A Collection of Maithili Poems by Keerti Narayan Mishra

संजय -- अर्चना
अजय -- स्मिता
मनीषा-- शैलेश
कैँ
सस्नेह

समकालीन मैथिली कविताक साम्प्रतिक प्रवृत्ति

कोनो काल-खण्ड विशेषक कविताकेँ ओकर मूल प्रवृत्तिक आधार पर वर्गीकृत/विश्लेषित करब बड़ कठिन काज छैक। एहि कठिन काजक लेल बनाओल आधार-सिद्धान्त एवं विश्लेषण-पद्धति कतबो वैज्ञानिक आ प्रामाणिक हो, ओकर निष्पत्ति दोषमुक्त नहि भऽ सकैत अछि, ताहूमे, तत्व जँ वस्तुगत नहि भावगत हो, आ ओहि भाव-प्रवाहकेँ देश-काल, सामाजिक व्यवस्था, तात्कालिक परिस्थिति,राजनैतिक एवं वैचारिक प्रतिबद्धता सभ प्रभावित/ आन्दोलित कऽ रहल हो।

मैथिली कविताकेँ ग्राम-जीवनक सरलता, माटि-पानि, बन्धुत्व-भाव, पारस्परिकता, यथास्थितिक स्वीकार्यता, पैतृक संस्कार, पैतृक सम्पत्ति पर निर्भरता प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपमे आइयो आकृष्ट करैत छैक। वैश्विकताक भाव ओकर महत्वाकांक्षा छैक, स्थानिकता स्वभाव आ शक्ति। किन्तु, एकर संगहि टूटैत ग्राम-जीवन, दड़कैत सम्बन्ध, अभावक आँचमे झड़कैत/विकृत होइत स्नेह-सौहार्द, बढ़ैत बेकारी, अपराधवृत्ति, भय, आतंक एवं असुरक्षा-बोध ओकरामे प्रतिहिंसाक भाव एवं आक्रोश जगबैत छैक। ओ गामसँ पलायन करैत अछि। मुदा जतय अछि, गामकेँ उघने जाइत अछि अथवा गाम ओकर पाछू लागल रहैत छैक। ओ सोचैत अछि-

शहर पचा नहि पाबि रहल-ए
गाम अटा नहि पाबि रहल-ए
शहरमे संज्ञाक संकट
गाममे सर्वनाम सन हालति
मतलब पूरा-क-पूरा व्याकरणे गड़बड़

पंकज पराशर (सर्वनाम)

ई द्वन्द्वपूर्ण मानसिकता ओकरा दू डेग आगाँक बाद एक डेग पाछाँ वला गतिशीलता दैत छैक। ओ चलैत रहैत अछि मुदा ततेक आगाँ नहि बढ़ि पबैत अछि। शहरक संघर्ष ओकरा असहज बनबैत छैक। असहजता पीड़ा तथा आक्रोशसँ भरि दैत छैक। ओ लड़ैत अछि आ परिस्थितिक अनुकूल अपनाकेँ ढारऽ चाहैत अछि। ओ टूटैत अछि, खण्ड-खण्ड होइत अछि मुदा अपनाकेँ जोड़ऽक प्रक्रियामे लागल रहैत अछि। अद्‌भुत जिजीविषा ओकरामे छैक। खतरा आ अनिश्चितता ओकरा विचलित नहि करैत छैक। आजुक व्यवस्थाक अंग शोषण एवं अमानवीयता ओकरा आतंकित नहि करैत छैक। तथापि, ओकर संघर्षशक्ति आ बुद्धि विवेक दुष्चक्रमे फँसल रहैत छैक। परिस्थितिक इएह विपरीतता एवं विडम्बना आजुक पीढ़ीकेँ उत्तराधिकारमे भेटल छैक-थोड़ेक आओर उग्र, थोड़ेक आओर पीड़ादायक, थोड़ेक आओर चुनौतीपूर्ण भऽ कए।

जे मनोदशा आ सरोकार छठम/सातम दशकक उपजीव्य छल, ओ आठममे आबि कए भ्रष्टाचार, निरंकुश शासन, आपातकाल आ सम्पूर्णक्रान्तिक तापसँ थोड़ेक कालक लेल गर्म भेल मुदा लगले सेरा गेल। आपातकाल आ सम्पूर्णक्रान्तिक पक्ष आ विपक्षमे ठाढ़ होअए वला अधिकांश कवि अपन काव्य-विवेक पर प्रश्नचिन्ह लगबा कए, 'कुर्सी-क्रान्ति' देखैत रहि गेलाह। तात्कालिकता आ आवसरिकता पर अविचारित निर्भरता कविकेँ लोकप्रियता तँ दिआ सकैत छनि, स्थायित्व नहि। कहबी छैक, कवि भविष्यद्रष्टा होइ छथि मुदा यथार्थ ई अछि जे सुविधानुसार अपनाकेँ दृष्टिहीनो बना सकैत छथि।

नवम दशकक पूर्वोत्तर घटनाक्रान्त रहल। एहि अवधिक घटनाक्रम पर दृष्टिपात कएलासँ बुझाइत अछि जे सभ किछु पूर्वनियोजित छल आ सौंसे संसारकेँ मूक बनि विश्वपटल पर एहि घटाटोपकेँ देखैत रहबाक छलैक। पहिने ग्लासनोस्त (खुलापन/ उदारीकरण) पछाति, पेरेस्त्रोइका (पुनर्गठन), फेर सोवियत संघक विघटन, समाजवादी विचारधारा पर साम्राज्यवादी विचारधाराक (आर्थिक/सैनिक/आणविक प्रभुत्व) आक्रमण, 'गैट', 'पेटेंट एक्ट'क माध्यमसँ भूमण्डलीकरणक रथ-यात्राक मार्गक प्रशस्तीकरण, सूचना-विस्फोट आ 'विश्वगाम'क अवधारणाक (महाबली मुखियाक सुविधाक लेल) प्रचार-प्रसार।

दोसर दृश्यमे - विकाशील/अविकसित/पछड़ल देशकेँ अस्थिर करबाक प्रयास, भेद-नीति, खुफिया-तंत्र, बाजारवादक विश्वव्यापी विस्तार।

परिणाम, भारतमे धार्मिक उन्माद, बाबरी मस्जिदक विध्वंस, अयोध्याकेँ अखहरा बना कए 'रामलला' केर मंचन, गोधरा काण्ड, बेस्ट बेकरी काण्ड, अक्षरधाम, कश्मीर विधान सभा आ भारतीय संसद पर आतंकी हमला।

सामाजिक असुरक्षा, जन-असंतोष, भ्रष्टाचार, घोटाला, राजनेताक आपराधिक चरित्र आ अपराधीवर्ग पर निर्भरता, बेरोजगारी, निरक्षरता एवं सिद्धांतविहीन राजनीति अपना देशकेँ 'अनाथ' आ नेतृत्वहीन सिद्ध कऽ देलक अछि। ओना, क्षत-विक्षत राष्ट्रीयताक 'रिपेयरिंग'क लेल राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय अनुबंध निर्गत होइत रहैत अछि।

मैथिलीक साम्प्रतिक कविता पर एहि अन्तरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय घटनाचक्रक सर्वाधिक प्रभाव पड़लैक कियैक तऽ मिथिला बिहारमे अछि आ बिहार अपना देशक सभसँ पछुआएल राज्यमे अछि। एहि ठामसँ प्रतिभा, बौद्धिकशक्ति एवं श्रमशक्तिक पलायन वेशी होइत छैक, ओ अपन अन्तः आ बाह्य पर दंशक वेशी अनुभव करैत अछि।

एहि नव्यतम बोधक ग्रहणशीलता, प्रतिक्रियाशीलता, ओकर आत्मसातीकरण एवं ओकर रचनात्मक अभिव्यक्ति जँ एकमात्र नहि तँ मुख्य उपजीव्य छैक साम्प्रतिक मैथिली कविता केर।

पछिला एक-डेढ़ दशकमे चारि दर्जनसँ वेशी कविता-पुस्तक बहरायल अछि जाहिमे आधासँ बेशी ओहि स्थापित कविक पोथी छनि, जनिक अनेक संकलन पहिनहुँ छपि चुकल छलनि आ चर्चित- विश्लेषित होइत रहल छथि। नव संकलन सभ हुनका लोकनिक सर्जनात्मक नैरंतर्य आ काव्य-दृष्टिक विस्तारक परिचय दैत अछि, अपन रचनात्मक मोड़क कारण पाठक/आलोचककेँ पुनर्विवेचनक पर्याप्त आधार दैत अछि।

एहि कोटिमे सोमदेव, धीरेन्द्र (आब स्वर्गीय), जीवकान्त, गंगेश गुंजन, भीमनाथ झा, उदयचन्द्र झा विनोद, रामलोचन ठाकुर, कुलानन्द मिश्र, उपेन्द्र दोषी, केदार कानन आदिक संग-संग एहि पांतिक लेखकक काव्य-संकलन आबित अछि।

एहि अवधिमे मैथिली साहित्यक शीर्षपुरुष श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क 'ओहि-पओहि' एवं श्री गोविन्द झाक 'प्रलाप' तथा सुकण्ठ जनकवि श्री चन्द्रभानु सिंहक पहिल काव्य संकलन- 'स्वदेश-भारती', जाहिमे पारम्परिक शैलीमे युगीन बोध अभिव्यक्त भेल अछि, आयल अछि।

एकर अतिरिक्त गंगेश गुंजन, सियाराम झा सरस, नीरजा रेणु, शिवाकान्त पाठक, विनय कुमार मिश्र, दयाकान्त मिश्र, जगदीप नारायण चौधरी 'दीपक', शशिबोध मिश्र 'शशि' आदिक गीत, गजल व पारम्परिक कविताक संकलन तथा महाकाव्य सेहो प्रकाशित भेल। गंगेश गुंजन एवं सियाराम झा सरस अपन गीत/गजलमे वर्तमान विद्रूपता/पाखण्डकेँ शब्द आ स्वर देलनि अछि। शेष संकलन अतीतोन्मुख भावबोध/चिन्तनक परिचय दैत अछि।

एहि सम्पूर्ण परिदृश्य पर दृष्टिपात कयलासँ बुझाइत अछि, एक दिस अतीतजीविता, ग्रामाभिमुखता आ रागात्मकता प्राप्तवय एवं बहुत रास नवतूरक कविक पछोर नहि छोड़ि रहल छनि तँ दोसर दिस किछु प्रतिभावान एवं संघर्षशील युवा कवि जे गाम-कस्बा छोड़ि नगर-महानगरमे आबि गेल छथि, निर्मम मशीनी जीवन, असुरक्षा बोध एवं अनिश्चित भविष्यक कारण काल्पनिकता/आत्मीयता/प्राकृतिकता/निश्चिन्तताक बाट, आजुक पूर्णतः बदलि गेल गाममे जोहैत छथि।

प्रत्येक रचनाकारक अनुभूतिक अपन परिधि होइत छैक, ओकर परिस्थितिक रंग होइत छैक एवं भूत-वर्तमान-भविष्यकेँ देखबाक फराक दृष्टिबिन्दु होइत छैक। उपरिचर्चित पूर्वराग एवं उत्तररागमे विपुल रचना भेल अछि। रचनाकार कतेक सजग छथि, हुनक आत्मरागमे आत्मान्वेषण आ आत्मसंघर्षक कतेक परिणाम छनि, युगीन परिस्थिति कोन रूपमे सभाहित छनि, कतेक जन- सापेक्षता छनि, ई रचनाकार आ पाठक दुनूक लेल अन्वेषणक विषय, दुनूक लेल महत्वपूर्ण। कोनो रचना, कोनो विचारधारा, कोनो अवधारणाकेँ सोझे खारिज नहि कैल जा सकैछ, कविक स्वायत्ततो पर प्रश्नचिह्न नहि लगाओल जा सकैछ किन्तु ओहिमे समय, समाज, साहित्य एवं सत्यक अन्वेषण तऽ कैले जा सकैत छैक।

साहित्यमे व्यक्तितंत्र, भावनात्मक एकाधिकारवाद एवं विचार तथा पद्धति-विशेषमे लिखल साहित्य अथवा विचारगत प्रतिबद्धताक वर्चस्व-स्थापनक प्रयास समय-समय पर होइत रहल अछि। अतिरेकवादी भावोच्छ्वासकेँ साहित्य बूझल जाइत रहल अछि। एहना स्थितिमे रचनाकार द्वारा आत्मानुशीलन एवं पाठक/आलोचक द्वारा रचनाक अन्तःपरीक्षण दुनू आवश्यक।

बहुवर्णिता, बहुधर्मिता, बहुध्वन्यात्मकता एवं बहुसांस्कृतिकताक अन्तर्वस्तु

भारतीय काव्यप्रतिमाकेँ रूपाकार देने अछि। मैथिली कविता अपेक्षाकृत छोट भौगोलिक/आकृतिक सीमोमे एहि विविधतामय अखिल भारतीयतामे अपन सहभागिताक प्रति सजग रहैत अछि।

मैथिली कवितामे 'चित्रा' सँ जे प्रवाह-दिशा बदलल छल, ओकरा आओर गतिशील, आओर समाजोन्मुख, आओर जन-सापेक्ष बनयबामे साठोत्तरी पीढ़ीक प्रायः अढ़ाइ/तीन दशकक लेखन एवं ओहि अवधिमे चलाओल गेल काव्यान्दोलनक महत्वपूर्ण भूमिका रहलैक अछि। आजुक अधिकांश ख्यातनामा कवि, कथाकार, उपन्यासकार, चिंतक एवं आलोचक ओही खाढ़ीसँ अबैत छथि। मैथिली साहित्यकेँ साहित्यक अखिल भारतीय प्रतिस्पर्धामे प्रतिष्ठापूर्ण स्थान दिअयबामे एहि पीढ़ीक ऐतिहासिक योगदान अछि।

परवर्ती पीढ़ीक समक्ष बीसम शताब्दीक सर्वाधिक त्रासद एवं चुनौतीपूर्ण परिदृश्य रहलैक। उदारीकरणक आवरणमे बाजारवाद, सोवियत संघक विघटनक बाद अमेरिकी वर्चस्वक आतंक, साम्राज्यवादी शक्तिक समाजवादी विचारधारा पर आक्रमण आदि। युवाकविक तीक्ष्ण दृष्टि सभ पर पड़ल अछि। संवेदनहीन अभियान द्वारा मनुष्यकेँ विकल्पहीन, संदेहशील, निर्जीव आ निरुपाय बनयबाक असली अभिप्रायकेँ बूझैत ओ जे भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त कयलनि अछि, ओ हुनक काव्य-विवेकक परिपक्वताक परिचायक थिक, काव्य-प्रवाहकेँ युगीन सत्य दिस मोड़बाक प्रयास थिक, काव्य प्रवृत्तिकेँ नव दिशा देबाक उपक्रम थिक।

साहित्यकेँ संजीवनी भेटैत छैक नवका पीढ़ीक सृजन-सजगतासँ। समकालीन मैथिली कवितामे अपन सतेज भूमिकाक लेल अनेक कवि उल्लेख्य छथि। एतय ने सभ भर विस्तारसँ चर्चा संभव, ने उदाहरणस्वरूप किछु काव्य-खण्डकेँ राखि ओकर विश्लेषण। मात्र नामोल्लेख करब न्याय संगत नहि हैत। तथापि किछु पुस्तकक नाम गनायब आवश्यक।

'आब आगाँ सुनू' (कुलानन्द मिश्र), 'यंत्रणाक क्षणमे' (उपेन्द्र दोषी) (दुनू वरिष्ठ कवि आब स्वर्गीय भऽ गेल छथि), 'लाख प्रश्न अनुत्तरित' (रामलोचन ठाकुर), 'नेहाइ पर स्वप्न' (विभूति आनन्द), 'मिझायल सूर्यक नगर' (कुमार मनीष अरविन्द), 'चानन काजर' (देवशंकर नवीन), 'अंगना एकटा आग्रह थिक' (नारायणजी), 'पांगल गाछक छाहरि' (फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'), 'धारक ओइ पार' (जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल'), 'पराती जकाँ' (विद्यानन्द झा)। उपर्युक्त काव्य संकलन सभसँ मैथिली नवकविता आओर समृद्ध भेल अछि आ भारतीय काव्य-साहित्यकेँ श्लाघ्य योगदान भेटलैक अछि।

एहि मध्य समकालीन कविताक क्षेत्रमे एकटा नव नाम अपन काव्यगत आ शिल्पगत वैष्ट्यिक कारण पाठकक ध्यान आकृष्ट कैलक अछि। ओहि कविक नाम अछि विवेकानन्द ठाकुर आ काव्यकृतिक नाम 'एकसरे ठाढ़' एवं 'चानन घन गछिया'। मैथिलीमे प्रायः जन्मवर्षक आधार पर समकालीन-प्राचीन, नव-पुरानक वर्गीकरण होइत रहल अछि। किन्तु किरण, यात्री, किसुन आ आब बहत्तरवर्षीय विवेकानन्द ठाकुर, अद्यतन बोधक रचना लिखि अपन वयसकेँ नकारलनि अछि आ सिद्ध कैलनि अछि जे रचनाकारकेँ वय नहि, बोध पुरान अथवा नवीन बनबैत छैक।

विद्यानन्द झाक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित कविता, भाव आ शिल्प दुनू दृष्टिएँ, सद्यबोधक परिचय दैत रहल अछि। एम्हरे हुनक काव्य-संकलन 'पराती जकाँ' प्रकाशित भेल छनि। अपन कविता-'राति एक टा यातनागृह'मे ओ लिखैत छथि-

हमर भीतर/एकटा जहलखाना अछि/जाहिमे बन्न अछि/हमरे कैक टा अंश सब/ रोज राति भोंकैत रहैत अछि भाला/गत्र-गत्रमे/ आ शोणित शोणिताम/ छटपटाइत रहैत छी।

रेसमक कीड़ा जकाँ आजुक मनुष्य अपना लेल स्वयं जाल बुनैत अछि आ ओहिमे फँसैत-धँसैत अपन अस्तित्वकेँ समाप्त कऽ लैत अछि, अपन-अपन जहलखाना स्वयं बनबैत अछि आ ओहिमे कैद रहि समाप्त भऽ जाइत अछि।

हरेकृष्ण झा विखण्डित होइत विश्वास आ निष्पंद होइत मानवीयताकेँ 'कियैक मुदा एहिना'मे जोहैत सौन्दर्यक शुभंकर सनेसक संभावना पसाहियोमे देखैत छथि-

जखन ई भुवन होइत रहैत अछि लहालोट/ बिलहैत सौन्दर्यक शुभंकर सनेस/ कोना लगैत अछि पसाही सभक नस-नसमे/ एक-दोसरक लेल/ धमकैत अछि भालाक नोक कोना/ सभक एकेक टा धड़कनमे?

डा. शिवेन्द्र दास प्रगतिशील सोच आ जुझारू प्रवृत्तिक कारणे समकालीन मैथिली कविताक एक महत्वपूर्ण नाम छथि। आइ सम्पूर्ण देशक जेहन वातावरण बनल अछि, जतेक प्रकारक अन्याय-अत्याचार सभतरि पसरल अछि, तकर निचोड़ हिनक कवितामे एहि तरहेँ व्यक्त भेल अछि-

हुनक कहब छनि जे/हिनक दलीलमे दम छैक/हुनके दलीलक दम पर देश प्रगतिशील छैक/ई सभ नकारि देने छथि अयना/भूख,लू,ठंढ, बाढ़ि,बिमारी आ बलात्कारसँ/भेल मृत्युक/ई सभ षड्यंत्रजनित प्रचार करैत छथि/इमानक बोझ तर हाँफैत, हाहाकार करैत/लोक एखनो बचल छैक-एकरा/ओ बरगलायब कहैत छथि/हमर ई मित्र सभ/ कोनो प्रकारक हिंसाक विरुद्ध छथि/नतमस्तक गारि सुनैत गरदनिकेँ/कनिको टा तनिते/ई गरदनि उतारबाक तैयारी शुरू कऽ दैत छथि।

(हमर विरोध)

कोसीक उपेक्षित-दलित-पीड़ितक मौन-व्यथाकेँ अपन स्वर दैत प्रगतिशील आ नवताक पक्षधर कवि डा. नवीन कुमार दासक कवितामे जनमानसक पीड़ाक कतेक सम्वेदनशील अभिव्यक्ति भेल अछि, तकर एक उदाहरण देखल जाय-

बहरिया लोक एतय नहि अबैछ/ चुनाओ समयोमे नहि/ वोट होइत अछि- सुनैत छी नाहे पर/नहि, कतहु आनठाम जयबा लेल/ नहि होइत अछि तैयार ई सभ/कियैक तँ छिन्न होइत नदीक संग/छिन्न होइत जाइत अछि चिन्ता...

जीवनक प्रति आद्यन्त आस्था आ विश्वास डा. नवीनक कविताकेँ

विशिष्ट बनबैत अछि– आँगनमे सूखैत अछि रिलीफक गहूम / आ दोसर-टाट-खढ़-छप्पर धरि पसरि जाइछ जिनगी / घून जकाँ / सूखल खधाड़िसँ मारि अनैत अछि नेना सभ। पोठी, गरइ, चेंगा आ कांकोड़ / जखन पकाओल जाइछ आगिमे / तँ उबकाइत सोहारिक स्वादकेँ जीति लैत अछि।

(कोसीक बालु जकाँ जीवन)

प्रगतिशील विचारधाराक प्रतिभासम्पन्न कविक रूपमे कृष्णमोहन झा अपन स्थान बनौलनि अछि। शब्द आ शिल्प चयनमे हुनक निष्णातता हुनका महत्वपूर्ण बनबैत छनि। अपन भावकेँ सोझ-सरल शब्दमे राखि ओ प्रभाव उत्पन्न करैत छथि। 'एकटा गाछक यात्रा-वृतांत' तथा 'अहाँकेँ केओ सोर करैए' हुनक सहज अभिव्यक्तिक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

तहिना रामचैतन्य धीरज बुद्धक निषेधमे सर्जनाक उन्मेष जोहैत विचार-कविताक कविक रूपमे अपनाकेँ प्रतिष्ठित करैत छथि। एक टा बानगी-

हमर मनुक्ख / सचेत / देखैत अछि / प्रलयी नर-समुद्रमे / उठैत तूफान / मनुक्खक दलाली / दलालक चारूकात / अत्यन्त कमजोर अछि / सभटा बन्हन / कर्मकाण्ड मजगूत होइत / चलि जा रहल अछि / ई बुद्धक मरैक नहि / जगबाक खबरि थिक।

(बुद्धक मरैक नहि, जगबाक खबरि)

कवि रमेश अपन पीढ़ीक कविमे सबसँ फराक आ बेछप पहिचान बनौलनि अछि। हुनक नजरि मिथिलाक गाम-घर, कोसी-कमला, बाढ़ि-सुखाड़ि, बेकारी-भूखमरीसँ लऽ कए तरेगन-युद्ध, ग्लोबल षड्यंत्र, विश्वग्रामक बाजारवाद, कम्प्यूटर-संजाल, आर्थिक साम्राज्यवाद, विकासक नाम पर पसरैत / पसारल जाइत अपसंस्कृति-सभ पर रहैत छनि।

पहिने तरेगन-युद्धक माला जपिकऽ अहाँक उत्तेजनाकेँ सय डिग्री सेल्सियस धरि पहुँचा देत / अहाँ दुनू सहोदरकेँ पितिऔत बना देत / अहाँ दुनू भैयारी जखन एक दोसरसँ, ओलि सधेबाक व्योंतमे लागल रहब, ओ अपन मनोनुकूल समझौता लेल एक टा रोबोटकेँ शान्तिदूत बनाकऽ पठाओत। ओ अपन चोर उपग्रह द्वारा अहाँक रणनीति आ नक्सा चोरा लेत। फेर तँ हथियार, कम्प्यूटर आ रोबोट ओकर। अहाँक माथ जीह आ कलम ओकर। तखन ओ अहाँक बेटीकेँ अपन देशक नागरिक बनाकऽ अन्तरिक्ष यात्राक कल्पनाक उन्मादसँ बोरि दैत। अहाँ विकास-दर-वृद्धि, मृत्युदर, महगी, विनाश आ मुद्रास्फीतिक चढ़ा-उतरीमे अपस्यांत रहब जहिया, भिनसरे-भिनसर अहाँक अङ्नामे अन्तरिक्ष मानव उतारत तहिया।

(दिशांस लागल उका-पतङ)

हुनक कविताक गद्यात्मक शैली एवं शब्द-विन्यास मैथिली कविताक परिधिक विस्तार करैत अछि।

आजुक बदलल / विकृत होइत परिस्थिति एवं संस्कृति पर उत्पन्न खतरासँ पलायन नहि मोकाबिला आवश्यक छैक। पंकज पराशर एहि 'दिशाभ्रम'केँ तोड़ि सुनिश्चित दिशा तय करऽ चाहैत छथि, एकटा नव इतिहास गढ़ऽ चाहैत छथि-

विकल्प हमरा लग कम अछि आ / इतिहास आँखि गुड़ारि रहल अछि / मुदा यात्रा स्थगित कयल जयबाक सुझाव आब निरर्थक अछि / हे हमर पिता / हम अगर विघ्न लागलासँ भुतिआइयो जाइ / वा अदृश्यताक डरेँ डेराइयो जाइ / तँ पुत्रमोहमे यात्रा स्थगनक प्रस्ताव अहाँ नहि देब / देब मात्र शुभकामना कि हम कऽ सकी पूर्ण अहाँक अपूर्ण यात्रा।

(दिशाभ्रम)

नवका पीढ़ीक अधिकांश कवि जकाँ विनय भूषणोक कोनो कविता-संकलन नहि छपल छनि किन्तु पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल हुनंक कविता सभ संघर्षशील मनुष्यक दुर्धर्ष संकल्प-शक्ति आ युयुत्साक इतिवृत्त प्रस्तुत करैत अछि। ओ आजुक अन्धकारमे घर्षण उत्पन्न कऽ मनुष्यक लेल प्रकाशक चिनगी बहार करऽ चाहैत छथि, अन्हरिया आ डेराओन सपना पर प्रकाश आ यथार्थकेँ विजयी बनाबऽक लेल, हंता आ दुश्मनक प्रतिकारक लेल, ओरिआओनमे लागल रहैत छथि-

एहि संदेहक सियाह अन्हारमे / बुझाइ छैक सभ / हंता आ दुश्मन / हम बेलल्ला भेल / औनाइत रहै छी / कोनो चिनगीक लेल / हम दोड़ैत / आगू बढ़ैत जाइत छी / एहि सियाह अन्हारमे / जोगने रहै छी / छातीमे / असंख्य डेराओन सपना।

(संदेहक सियाह अन्हारमे)

उत्तरोत्तर जटिल होइत विश्वव्यवस्थामे मानवीय संवेदनाक निर्जीवीकरण भऽ रहल छैक, लोक सुखक लालसामे निर्जीव साधनक मकड़जालमे फँसि स्वत्व आ सहजता हेरा रहल अछि। स्वविवेक आ स्वनिर्णयक अधिकारसँ वंचित भऽ रहल अछि। बढ़ैत आन्तरिक दरिद्रता ओकरा निरुपाय / निस्सहाय बना रहल छैक। रमणकुमार सिंह एहि निर्जीवीकरणक पीड़ाकेँ अपन 'निर्जीव' कवितामे अभिव्यक्त केलनि अछि-

अपन अतिरिक्त आकर्षणमे कहियो काल / हमरो सभकेँ बना दैत अछि निर्जीव / मोन होइत अछि जे कोनाहितो / बचि जाइ निर्जीव हेबासँ / बेजायकेँ बेजाय कहि कऽ सकी विरोध / नीक गपक पक्षमे भऽ सकी सहमत / हँसि सकी फूल जकाँ निर्दोष हँसी / आ बचा ली थोड़े समय मित्र आ परिवार लेल / मुदा कहाँ कऽ पबैत छी हम एना / बौआइत रहि जाइत छी निर्जीवक अतिरिक्त आकर्षणमे।

सौंसे पृथ्वी पर विकासक नाम पर विनाशक जाल पसारऽक मंशा राखऽ वला अणु-आयुधसम्पन्न देश पृथ्वीक रक्षाक स्वांग रचैत गरीब देशकेँ पृथ्वी पर आगत खतराक लेल जिम्मेदार मानि घोल करैत रहैत अछि। अजित कुमार आजाद ओकरा बरजैत लिखैत छथि-

थम्हू बटोही कनेक आर थम्हि जाउ / एखन जुनि तोड़ियौक पृथ्वीक निन्न / युग-युगान्तसँ थाकल पृथ्वीकेँ / कनेक आर सुस्ताबए दिऔ / पुलकित होअए दिऔ बसातकेँ / एहि छौड़ी सभकेँ / जीबि लेबए दियौ कनेक आर जीवन।

(सुस्ताइत अछि पृथ्वी)

दुष्चक्रमे फँसल पृथ्वी पर निरन्तर अन्धकार, संदेह एवं द्विविधा पसारि

जन-मानसकेँ भय आ आतंकसँ ग्रस्त कए ओकरा आओर त्रस्त करबाक लेल नित नव हथियार गढ़ल जाइत अछि। आहटिकेँ अकानैत लोकक निन्न हेरायल रहैत छैक आ ओ आजीवन भोरक आकुल प्रतीक्षा करैत रहैत अछि। एहि मनोदशाक जीवन्त चित्र सुस्मिता पाठकक निम्नलिखित पंक्तिमे भेल अछि-

कखन कोन राति क्यो गढ़त हथियार/ सर्द चुप भेल मृत राति/ आ सन्देहास्पद आहट/ ठक्-ठक् के विरूद्ध/ कि भोर कखन हैत/ कखन हैत भोर।

(कखन होयत भोर)

उपर्युक्त उद्धरण सभक काव्य-विषय आ कवि-चिन्ता मैथिलीक समकालीन कविताकेँ अपन व्यंजनामे माटिपानिसँ सम्पृक्त राखि अनन्त आकाश वला विस्तार दैत विश्वजनीन बनबैत अछि। हमरा जनैत कोनो जाग्रत भाषाक साहित्यक इएह काम्य होइत छैक। आजुक कवि आ कवयित्री दुनूक भाव-तरंगमे हमरा विलक्षण सहगामिता भेटैत अछि। दुनूमे तथाकथित वैश्वीकरण, बाजारीकरण आ उपभोक्तावादी मानसिकताक प्रति समान चिन्ता, समान आक्रोश, समान आक्रामकता। कवयित्री सुस्मिता पाठकक संगे ज्योत्स्ना चन्द्रम एवं कामिनीक निम्नोद्धृत कांव्यांश देखब प्रासंगिक-

ओ फूल देखै/नागफनीक/ ओ गति देखै प्रक्षेपास्त्रक/ओकर हाथमे खेलौना होइ/ रोबोट...रिमोट.../ओ खेलाए/इन्टरनेट/ओ नहाए/ साइबर कैफे/ ओ सोचए/जे एखन धरि नहि सोचल गेल रहै...।

मने, तिरोहित भऽ गेल रहै/ ओकर मोनसँ जेना/ नवयौवनाक कोमलता/ आ माधुर्य/ आ उछाह/ आ...आ/ तेँ नहि अबै/ ओकर स्वप्नमे कोनो राजकुमार।

बएसक एक समय-सीमा धरि अबैत/ एहि तरहक भावनाक/ आ कामनाक निरर्थकताकेँ/ रेखांकित करैत/ ओ स्वप्न देखै कोनो राजकुमारक नहि/ ओ स्वप्न देखै/ अपन अन्दरसँ अंकुराइत/ कोढ़िआइत/ भकरार जन्म भेल फुलाइत/ आर्थिक रूपसँ सम्पन्न एक नारीकेँ।

ज्योत्स्ना चन्द्रम(ओकर जहिया जन्म भेलै)

आइ देह बेचनाइयो फैशन भऽ गेल/ आ देह खरीदनाइयो/ धर्मक जे मोट चादरि/ ओढि लेने छल लोक/ आधुनिकताक बिड़रो/ उड़ि गेल ओहो...../ कोनो सभा भवन/ कोनो मंदिर सेहो/सभ जगह/ स्त्री इस्तेमाल भऽ रहलैयै/ छूरी आ काँटा जकाँ एक रंग।

कामिनी (आरंभ-30)

नवका पीढ़ीमे एकटा आओर नाम-अमरनाथ झा'भारती' अपन सतेज रचना-दृष्टिक कारण चर्चामे आबैत रहैत छथि।

एकैसम शताब्दीक कविताक लेल परिवेश, परिस्थिति, चुनौती आ काव्य-विषय पछिला शताब्दीसँ सर्वथा भिन्न छैक। अपसंस्कृति, भ्रष्टाचार, राजनैतिक प्रदूषण, जन-विमुखता आ लोक-कल्याणक भावनाक लुप्तता, व्यक्ति आ राष्ट्रक आत्मसम्मान पर आसन्न संकट सभ मिलि कए आजुक काव्यचेतनाकेँ उद्वेलित कए ओकरा प्रतिकारक मुद्रामे ठाढ़ कऽ देने छैक, अतीतक पुनर्व्याख्या करऽक लेल बाध्य कऽ देने छैक, नव प्रतीक, नव बिम्ब, नव [illegible] सृष्टिक विवशता उत्पन्न कऽ देने छैक।

कविताक वर्तमान स्वरूप आ संभावित जटिल रूप सम्प्रेषणक मार्गकेँ आओर दुर्गम बना देतैक, पहिनहिसँ आबि रहल संप्रेषणीयताक संकट उत्तरोत्तर गंभीर बनौने जयतैक।

एहन स्थितिमे कवि आ पाठक दुनू केर दायित्व बढ़ि जाइत छनि। कविकेँ अपन जटिल भाव आ विचारक अभिव्यक्तिक लेल प्रतीक, लोकवृत्त आ बिम्बकेँ अधिकाधिक जन-अनुमेय बनाबऽक प्रयास करऽ पड़तनि आ पाठककेँ आजुक विडम्बित एवं जटिल परिदृश्यकेँ ध्यानमे राखि भाव आ विचारक अन्तर्वस्तु धरि पहुँचबाक लेल काव्यास्वादनक परम्परागत पाठ-विधिकेँ वर्तमान युगबोधक अनुकूल परिवर्तित/विकसित करऽ पड़तनि। काव्य-रचना आ काव्य-आस्वादनक एहि शीर्षासनसँ तत्काल रसास्वादन बाधित हेतैक, पाठकक संख्या घटतैक एवं लोक-रंजनमे कमी अयतैक। किन्तु काव्यक धर्म मात्र मनोरंजने नहि मनोन्नयनो छैक।

एहि अर्थमे पाठसम्बन्धी तात्कालिक अवरोध अथवा असुविधाकेँ बिसरि, बोध-विस्तारसँ भविष्यमे होअए वला आत्मलाभ एवं कविताक परिधि-विस्तारक बात सोचबाक चाही।

वर्तमान विश्वव्यवस्था तथा वस्तुक संग-संग भाव, विचार आ संस्कृतिक वैश्वीकरणक निहितार्थकेँ बूझैत नवका पीढ़ी जाहि प्रतिरोधात्मक तेवरक संग संभावित भविष्यक दिस उन्मुख अछि, सूचना/प्रौद्योगिकी/ बाजारवाद/ उपभोक्तावादक मानवीय संवेदना पर पड़ऽवला प्रभावक संज्ञान लैत/ सृजनरत अछि, अपन जटिल भावक अनुकूल भाषा आ शिल्पक अन्वेषणमे रत अछि, आगामी कविताक प्रवृति-निर्धारणमे मुख्य भूमिका निबाहत। रमेश, पंकज पराशर, विनय भूषण, रमण कुमार सिंह, अजित कुमार आजाद, मधुकांत झा आदिक कविता एहि दिशामे आश्वस्त करैत अछि। □

झोकहरा (बरौनी)
14 जनवरी 2004

14.01.2004

रचना-क्रम

आदमीकें जोहैत

हम जोहि रहल छी
कन्दरा गुफा खंडहरमे आदमीक असल रूप
कतेक कठिन भऽ गेल अछि ओकरा चिन्हब

ओहुना
ओकर परिचय कहियो सहज नहि छल
जहिया अस्तित्व छलैक
ओ चिन्हल नहि गेल
आब नहि छैक
तेँ सभतरि जोहल जा रहल अछि

लोक कहैत अछि
पहिने ओ सिक्कामे बदलि गेल
फेर खजानाक रस्तासँ
आँकड़ाक शिखर पर पहुँचि
आजुक संगणनक बनि गेल

आब ओ मात्र गनती करैत अछि
कखनहुँ साँस
कखनहुँ नाड़ीक गति
कखनहुँ हृदयक स्पन्दन गनैत अछि
करैत अछि
अपन यांत्रिक विवेकसँ
अंक-विमुख लोकक
मृत्युमुखी होयबाक घोषणा

किन्तु ई आदमी जकाँ लगैत
कृत्रिम संवेदनवला जीव
आदमी तँ नहि भऽ सकैत अछि

कतेक आवश्यक भऽ गेल अछि
हमरा लेल
कन्दरा गुफा खंडहरमे वौआयब
आ जोहैत रहब
ओहि जीवक अवशेष
जे कहियो आदमी कहाइत छल □

अंतिका : जुलाइ-सितम्बर 1999

सागर

सागर
हमरा सूतऽ नहि दैत अछि
ठीक ओहिना
जेना छोट वयसमे
पितामह
रहि-रहि कऽ उठबैत छलाह

कनेको अनठौने
ओ गरजऽ लगैत अछि
उकठ करैत अछि
छीटऽ लगैत अछि नोनछर फुहार
भिजबऽ लगैत अछि देह
कखनहुँ ओढ़ा दैत अछि
लहरिक दोलाइ
कखनहुँ ढेहु पर उछला कए
लोकऽ लगैत अछि

सागर
कोनो-ने-कोनो लाथेँ
हरदम बजबैत अछि
पड़ाय चाहैत छी तऽ दौगि कए पकड़ैत अछि
सितुआ-शंख
काँकोड़-माछ
दऽ कए
खेलऽ कहैत अछि
मांगैत छियैक मोती
तऽ भीतर बजबैत अछि
डुबकी लगाबऽ लेल
पानिमे गोंतैत अछि

सागर
हमरा सङ चिक्कादरबरि खेलैत अछि
हम दौगैत छी
ओ लपकि कऽ पकड़ैत अछि
किन्तु अपना बेर मे
ओ छूअऽ नहि दैत अछि
हम जखन दौगि-दौगि
हाँफऽ लगैत छी
खसि-खसि कानऽ लगैत छी
धुर छीः कहि हँसि-हँसि कए
कान मड़ोरैत अछि
बिहुआ काटैत अछि
माथ हँसोथैत अछि
नोर पोछैत अछि
नूनू कहि
बाबू कहि
हमरा मनबैत अछि

सागर
पितामहे जकाँ
हमरा लेल चिन्तित रहैत अछि
पाथर तोड़ैत अछि
रस्ता केर कांट-कुश बीछैत अछि
तप्पत भेल बाटकेँ सिंचित करैत अछि

भरि-भरि राति जागल रहि
खिड़की पर टांगल रहि
हमर सुधि लैत अछि
योगक्षेम बहैत अछि □

कर्णामृत : अप्रैल-सितम्बर 1993

हृदय-तलसँ हजारक मीटर ऊपर

नीलगिरि
हम अहाँकेँ बहुत दूर छोड़ि आयल रही
दर्शन स्पर्श सामीप्य
सभकेँ अतीतक एकटा संयोग बूझि
घुरि आयल रही
कंकरीट आ मशीनक अभेद्य वीथिकामे

हृदय तलसँ हजारक मीटर ऊपर
प्रदूषण-युक्त कुचक्र-श्रृंखला मे
पूर्वगतिसँ चलऽ लागल छल श्वास

अल्पकालिक विरतिक बाद
आओर उन्माद-ग्रस्त
रहऽ लागल छलि आत्मा
आओर नृशंस बनल जा रहल छल
व्यवहार

अभयारण्यक
सघन सुदीर्घ वनलतालिंगित मनोरम दृश्य
युकिलिप्टस चीड़ शाल सागवान
देवदारु चंदनक
शीतल सुगन्धिमय छाया वितान
शिखर सँ उतरैत आ क्षितिजाभास दैत
लज्जानत कॉफी आ चाय-वाटिकाक हरीतिमा
वन-कन्या केर स्वेद-स्निग्ध सौन्दर्य
वनस्पति केर दाह-हारी स्पर्श
सभ भऽ चुकल छल विस्मृत
आ करऽ लागल छलहुँ
अपन अदाह्य प्रकोष्ठमे बैसि
लाक्षागृहक निर्माण
रचऽ लागल छलहुँ

[illegible]
[illegible]
[illegible] लागल छलहुँ,
[illegible]
किन्तु
कोनो निर्दिष्ट बटन पर आंगुर राखऽ सँ
[illegible]
होमऽ लागैत अछि प्रलयंकर गर्जन
फाटऽ लागैत अछि
वज्रकठोर छाती
टूटऽ लागैत अछि
पूर्ण सतर्कतासँ बनाओल
सभ सुरक्षा-कवच
आ हम
अपनाकेँ पाबैत छी छहोछित्त
कोनो उत्तुंग शिखर पर

घुरैत अछि चेतना नहि जानि कतेक कालक बाद
सुनैत छी
हवाक सन्-सन्
फुजैत अछि आँखि
देखैत छी माथ पर निरभ्र आकाश
पृष्ठतलकेँ गुदगुदाबैत दूभिकेर उच्छ्वास

होइत छी ठाढ़
देखैत छी धुंधमे डूबल पर्वत-राजि
गाछ-वृक्ष, शस्य... सभ एकात्म
पुछैत अछि मोन
अहाँक अभेद्य प्रकोष्ठमे
प्रविष्ट भेल कोना बोन
आ कि सभ छल स्वप्न
अथवा
आइ धरि छलहुँ अपनामे बन्न
आ भऽ गेलहुँ अकस्मात् आतंकित
अपनहि हिंस्रता
कऽ रहल अछि प्रत्याक्रमित

आओर कतेक संशय
उठि-उठि कए
करैत अछि नानाविध प्रश्न
हम भीतर जोहैत छी
बाहर दृष्टि दौड़बैत छी
धुंधमे डूबल बुझाइत अछि
सम्पूर्ण परिवेश
कतहु किरणक नहि लेश □
कर्णामृत : अप्रैल-जून 1994

चौबटिया

[illegible] गाममे एकटा चौबटिया छल
[illegible] पुरुषार्थी लोक सभ बैसि
[illegible] मुनिअबइत छलाह

[illegible] जिनको संग मे नहि छलनि
[illegible] लेल ओ सभ गंगा नहाइत छलाह
[illegible] प्राप्त काम हुनका सभक लेल
कनसारसँ भूजा भूजि आनैत छलनि
भीख भेटि जाइत छलनि
गाँजाक दू-चारि दम लगा कए

चौबटिया एखनहुँ अछि
किन्तु चौक कहाइत अछि
पुरुषार्थिये लोक सभ एखनहुँ बैसैत छथि ओतय
जिनका धर्म, काम आ मोक्ष तीनू
दिआ दैत छनि एकसरे अर्थ
जे पिस्तौलक नोक पर बास करैत अछि

ई चौबटिया जाग्रत शक्तिपीठ मानल जाय लागल अछि
सुपर कम्प्यूटर पर प्रकट होइत छथि
अणु-आयुध-संयुक्ता चामुण्डा
देश-विदेश सँ जुमैत रहैत छथि
बलिभोगी शाक्त
वर्षक प्रत्येक दिन एतय
मनाओल जाइत अछि
विजयोत्सव रक्ताक्त □
वैदेही : जुलाइ 1994

चल भाइ चल

चल भाइ चल
एम्हर छउ खाधि आ ओम्हर दलदल
बिचला समतल पर अजगर सूतल
मुँह बाटेँ पेट सँ ससरल-ससरल
चल भाइ चल

बाज भाइ बाज
एम्हर छउ नेता ओम्हर दलाल
बिचला रस्ता पर शोणित केर थाल
हत्यामे कटबेँ कि होयबेँ हलाल
बाज भाइ बाज

लिख भाइ लिख
एम्हर छउ मंडल ओम्हर कमंडल
बीच मे जाति-धर्म केर दंगल
एम्हर मरबेँ कि ओम्हर कटबेँ
सोचि-समझि कऽ लिख
लिख भाइ लिख □

रचनाकाल : 1 जनवरी 1993

मुक्त कुन्तला अमावस्या

जंगलमे दीप नहि जरैत छैक
बिजलीक खाम्ह नहि रहैत छैक
सभक मन-प्राण पर सदिखन पसरल रहैत छैक
मुक्त कुन्तला अमावस्या

लोक भरि राति तरेगन गनैत अछि
आ पहरुनियें सँ
माथ/पीठ/कान्ह/कोर मे अपन-अपन पहाड़ लादि
नीचाँ उतरऽ लगैत अछि

नीचाँ मे
झरकैत टिटुआइत गाछ-वृक्ष
हकमैत मवेशी
रोगाह ताप
लुक-झुकाइत इजोत
हँफसैत लोक

एहि सभकेँ ओ कोना सकत अंगेज
फाटऽ लगैत छैक करेज
ओ थकुआइत रहैत अछि बड़ी काल धरि
मयदान ओकरा आश्चर्य आ अभाव सँ
भरल बुझाइत छैक

ओ बिसरि जाइत अछि
अपन कष्टपूर्ण जीवनक सभ दंश
आ सस्त दाम मे
बेचऽ लगैत अछि
बचलहा वस्तु-जातक अंश
अपन पहाड़ पर घुरि जयबाक लेल □

प्रवासी : जून 1996

घऽरो लगैत अछि डेराओन

बटुक
अहाँ देखैत छी टी.वी. पर 'हॉरर शो'
डर एकदम्मे नहि लगैत हैत
विकराल आ भयावह आकृति सभ
चारू भर ठाढ़ किडनैपर्स
आतंकित नहि करैत हैत

छी अहाँ अजोह
मुदा भऽ गेल छी अनुभव-सम्पन्न
कऽ आयल छी अन्डर-वर्ल्ड सँ मास
गोधवा आयल छी सीँसे शरीर पर
की-कहाँदन
कऽ नेने छी बिजुरीक कुर्सी पर बैसि कए
इहलोक आ परलोकक यात्रा
प्राप्त कयने छी लखटकिया मुक्ति

हमरा सभ चओर-चाँचर मे
मचान पर एकसर सूतऽ वला लोक
रहि गेलिअइ खेतसँ बथान धरि
बूझि नहि सकलिअइ 'काउन्ट-डाउन'क अर्थ

ककरा कहैत छैक 'लाइफ-टैक्स'
ककरा कहैत छैक 'फिरौती'
से नहि बुझलिअइ
घुघना देखिते, घिसिऔड़ काटऽ लगैत छी
सभतरि 'हॉररे-हॉरर' बुझाइत अछि

बाउ,
कने टी.वी. लिअऽ बन्न कऽ
हमरा
घऽरो लगैत अछि डेराओन □
अर्पण : 1996

चिन्ता जुनि करह बाउ

[illegible] किछेक छह
गाछ आ नारिकेरक एहि गर्वोद्धत उद्यानमे
[illegible] गाछ जकाँ मूर्ह। किछेक झुकौने छह
भाल किछेक छह स्वर्णरेखा जकाँ अग्निदीप्त
मुँह किछेक छह सुन्न तोतापुली आम जकाँ

ओ भहुँ-नहुँ ससरि
लग आबि भऽ गेल ठाढ़
मुँह पर एखनहुँ छलैक
हारल जुआरी वला झांइ
छोड़ैत छल रहि-रहि कऽ भभका
सम्भवतः ई देशी युवा नेता
आक्रोश मे किछु बेसिये 'देसी' पीबि नेने छल

हम कहलिअइ
अहुना केओ होइत अछि उदास
ओहुना केओ हिम्मत हारैत अछि
ई कि कोनो पंचबरखा थिकैक
टुटिते रहैत छैक सभा
होइते रहैत छैक चुनाओ
एहि बेर ने ओहि बेर
तोहरो गोटी होयबे करतह लाल

चिन्ता जुनि करह बाउ
तौं छह तृणमुलिया खेलाड़ी
राखैत छह सभसँ भितरघतिया सम्बन्ध
करैत छह जनमत केर लेब-देब
आबैत छह कला
'बल्क'मे वोट कीनऽ वला
तखन कोन चिन्ता
तखन कोन परबाहि □
पुष्पांजलि : अंक-5,1999

ओ सभ की जानऽ गेल

कखनहुँ फूल कखनहुँ पात खसबैत अछि
गाछ-वृक्ष खिड़कीसँ रोज बजबैत अछि

हमर कडुआएल आँखि
फाटैत माथ
संकेतक भाषा बिसरि गेल अछि
मृतप्राय देह हरदम औन्हल रहैत अछि

आम पर कोइली
आ सीमर पर सूगाकेँ
हमर प्रतीक्षा रहैत छैक
नेनपन हमरा सभक बीतल छल एक संग
एक्के गाछी मे
एक्के सूरमे गैंचा-गैंची खेलैत
एक्के रंग हमरा सभकेँ रहैत छल प्रतीक्षा
अपन-अपन मायक
भूख लागला पर

हम चेतनगर होइतहि भऽ गेलहुँ चतुर
सूचना-सम्पन्न प्रविधि-प्रवीण सर्वगुण-आगर
ठेठ गमार जकाँ ओ सभ रहि गेल गाछिये मे
आनन्दोत्सव मनबैत

आइ जखन हम घुरल छी
ओहि पुरना गाछीमे
एतेक वर्षक बाद
लगैत अछि एखनहुँ चिन्हैत अछि
सीटी आ संकेत सँ ओहिना बजबैत अछि
ओ सभ की जानऽ गेल
हम भऽ गेल छी कतेक असंवेद्य □
कर्णामृत : अप्रैल जून 1996

एहि अरण्यमे

एहि अरण्यमे
हम रहैत छी ओ रहैत अछि
ओकरा सभहक गण रहैत अछि

धनुष रहैत अछि
तीर रहैत अछि
महुआ पिबइत भीड़ रहैत अछि

भूख रहैत अछि
गर्ज रहैत अछि
आइ.एम.एफ. केर कर्ज रहैत अछि

शेयरवाला धन रहैत अछि
मल्टीनेशनल धन रहैत अछि
मुक्त व्यवस्था केर कण्ठमे
राखल स्कैमक बम रहैत अछि

क्लिंटन केर पोस्टर रहैत अछि
डंकल-गैट मोनस्टर रहैत अछि
एफ-सोट्ठ केर नासिकाग्र पर
एमनेस्टी रोस्टर रहैत अछि

एहि अरण्यमे
हम रहैत छी ओ रहैत अछि
हमरा सभहक यम रहैत अछि □
कर्णामृत : अप्रैल जून 1996

कालाहाँड़ी

पुलिसकेँ एहू बेर
भेटल छलैक दारूक गंध
दू-चारि टा भट्ठीकेँ तोड़ि
सभ दारूखाना कऽ देने छल बन्न
किछुकेँ लतिया-लठिया
कहबा लेलक जे ओ लिखऽ चाहैत छल
पूर्ण भऽ गेल छलैक जाँच
लिखा गेल छलैक डायरी

दृश्यांकन कऽ चुकल छलाह मीडिया केर लोक
रिपोर्टिंग कऽ देल गेल छल भरिपोख
नेता लगा चुकल छलाह
एक-दोसर पर आरोप
शासन बैसा चुकल छल आयोग

मंत्री देखा चुकल छलाह
लाखक लाख टनसँ भरल गोदाम
कहि चुकल छलाह
भूखसँ तड़पि-ऐंठि मरबाक बात कहि
विपक्ष कऽ रहल छनि हुनका बदनाम

सभ अपन-अपन कर्त्तव्यक पालन कए
भऽ गेल छलाह निश्चिन्त
सभ करऽ लागल छलाह
आबऽ वला सुखाड़ि आ कि बाढ़िक प्रतीक्षा
मुदा कालाहाँड़ीक भविष्य पर
लागल रहि गेलैक प्रश्नचिह्न □
रचनाकाल : 1995

स्नेहवत्सला गोस्तनी

गोस्तनीमे बाढ़ि आयल छैक
वर्षासँ अथवा बान्ह तोड़िकए नहि
समुद्रक भिलरिया स्पर्शसँ
आलिंगन-समागमक निर्बन्ध आवेशमे
गत्र-गत्रसँ बहरायल नोनछर पसेनाक
अजस्र धारसँ

पहिले-पहिल हम जहिया देखने रहियैक
ओ बाल-विधवा सन लागलि छलि
भेल छल
रत्नाकरक अछैत
ई वैधव्य कियैक धारण कैलक
रत्नगर्भा बाँझ कोना भऽ गेल
बड़ी काल धरि सोचैत रहि गेल छलहुँ

साज-श्रृंगार-रहित एहि निष्प्राण नदीकेर दुनू कात
उगि आयल झौआ आ बबूर
एकरा तपोवन बना देने छलैक
ताड़ नारिकेर आ खजूर

करैत छलाह एहि ठाम अरण्य-वास
परम धार्मिक बक
तपस्वी चिल्होड़ि
इन्द्रियजित बाज
संयममूर्ति गिद्ध

ओ न पम्पा जकाँ पुष्ट छलि
आ ने गोदावरी जकाँ भरिगर आ विशाल

भाइ-भौजाइकेँ
गोस्तनीकेँ बिनु स्पर्श कयने

आगू बढ़ैत छथि
छगुन्तामे पड़ि गेल छलाह [illegible]

पांडव आ पांचालीकें बुझाल छलनि
उन्नतवक्षा गोदावरी पर पसरल
माया-कुहेसक रहस्य
छायाच्छन्न दण्डक केर मर्मकथा
हुनका नीक लागल छलनि
बितायब अरण्य-वासक प्रारम्भ-काल
हिल्लोलित समुद्र आ हर्षोत्तुंग पर्वत-समूहक मध्य
कुन्तीक आँचर जकाँ पसरल
गोस्तनीक सान्निध्यमे

वर्षक वर्ष धरि अपन पौराणिकता
आ अतीतक वैभवमे
हमरा बीआइत छोड़ि दिअऽ वाली गोस्तनी
आइ अपन युवा-स्पर्शसँ
हमरा कऽ रहलि अछि स्पन्दित
अपन आलोड़नसँ
हमर विदा-पथकेँ बना रहलि अछि अगम्य

एहि स्नेह-वत्सलाकें हम कोना बुझबियैक
कतेक मर्मान्तक अछि हमरा लेल ओकर कोरसँ
उतरि यात्रा पर बहरायब
ओकर स्नेह-स्पर्शक बिना जिनगी बितायब [ ]
प्रवासी : जून सितम्बर 1996

सन्धिपत्र

आउ-आउ
सोझे भीतर आबि जाउ
बाहर कियैक लगौने छी भीड़
-कऽ रहल छी ढेपाउज
-लगा रहल छी नारा
हम तँ अहीं सभक छी हरकारा
जखन चाहब फोलि देब अहाँ सभक फैक्टरीक ताला

आउ कनेक सुस्ता तऽ लियऽ
ठंढा वा गरम लए भऽ तँ जाउ शान्त
सभ समस्या केर छैक समाधान
नहि होउ अपस्यांत

क्षणांशमे जुमि जाइत छथि
बड़का-बड़का अफसर
बेयरा खनसामा खान-पान अधिकारी
हॉलमे प्रवेश करैत अछि घुड़कऽवला ट्रॉली
किछुकें विस्मित करैत छनि 'रॉयल सैलूट'
किछुकें मोहित कैलकनि 'बर्गरी'-स्तूप

तत्पश्चात्
अवतरित होइत छथि महामहिम उद्योगपाल
हाथ जोड़ि सभक कैलनि स्वागत
बाजलाह भऽ विनयावनत- शुरू कैल जाय
काजक बात प्रारम्भ करब कऽ कए पनपिआय

सभकें भेलनि
व्यर्थ करैत रहियनि हिनक विरोध
व्यर्थ छल हमरा सभक आक्रोश
ई तऽ लगैत छथि बड़ सहज लोक
- सभक सुननिहार

- कष्ट हरनिहार
अल्पाहारक बाद
सभकें थम्हा देल गेलनि रात्रि-भोजक 'मेनू'
शुरू भेल प्रस्तावित समझौताक प्रारूप पर विचार

प्रतिवाद, विरोध, आन्दोलन करऽ वला माथ
भऽ गेल छल जाम
ओतय भरि गेल छलैक 'डिनर'क सरंजाम
- भेंटऽ वला मोट-मोट लिफाफ

किछु खास किछु आम
जे रहथि उपस्थित भेलाह एकमत
कैलनि हस्ताक्षर
पहिल पक्ष
दोसर पक्ष
तेसर पक्ष
तैयार भऽ गेल संधि-पत्र

एहि तरहें
शोषणक विरुद्ध
श्रमहितमे आयोजित एहि संध्याकेर भेल समापन
गद्‌गद् महामहिम ठाढ़ भए
कैलनि सभक प्रति आभार प्रदर्शन आ धन्यवाद ज्ञापन □
रचनाकाल : 25 जून 1995

ओ जहिया आयल छल गामसँ

ओ जहिया गामसँ आयल छल हमरा लग
दुनू डिम्हामे भरल छलैक
ओतुक्के दृश्य, लोकवेद, चरचाँचड़, डाबरनदी
देखि ओकरा
आँखिमे घूमऽ लगैत छल सौंसे गाम

किछु दिनक बाद ओ रहऽ लागल असहज
चकित कैने रहैत छलैक शहर
-चुट्टी जकाँ ससरैत लोक
-मिल-फैक्टरीक साइरन, चिमनीक धुआँ
-अपन चाकरी, हमर सान्निध्य

बीतल किछु आओर दिन
आँखिक नीलाभा भऽ गेलैक ओड़हुलाह
बाजऽ लागल नेता/दलालक भाषा
आब हफ्ता उठा पोस्ट ऑफिस नहि दौगैत छल
ने लियऽ आबैत छल
हमर ठेकान पर आयल अपन चिट्ठी

जेना-जेना समय बीतल गेलैक
होइत गेलैक ओकर प्रभाव-विस्तार
भऽ गेल मजदूरसँ महानायक ओ
जीप, वायरलेस, रिमोट धयने रहैत छलैक पछोर
जासूसी दृष्टि पर रहैत छल सदिखन ओ

आब ओ हमरा कारण नहि
हम ओकरा कारण जानल जाइत छी
ओहि महानायकक संरक्षणमे
रहऽ वला मानल जाइत छी □
विचार : फरवरी-अप्रैल 1998

जाड़क ओहि दुपहरियामे

चिक्कन पिछड़ाह पाथर पर
हमरा ठमकल देखि
ओ बाजलि-नहि खसब, आगू बढ़इने जाउ पयर
नीचाँ बेसी गहींर नहि छैक-धाप लगाउ
हम खसऽ नहि देब
हम बढ़ैत छी आ डगमगाइ लगैत छी
ओ हँऽ-हँऽ करैत फानिकए अबैत अछि लग
लैत अछि डेन धऽ
बाजैत अछि
एहन समतल ढलान पर तऽ हमरालोकनि
चिक्का-दरबरि खेलाइत छी
अहाँ कियैक डेराइत छी
हम ओकर कान्ह पर भार देने
पार करऽ लगैत छी ढलान
ओ फर्रोस छौंड़ी सौंसे जंगल घुमबैत अछि
पुछैत अछि नाम कखनहुँ एहि गाछक
कखनहुँ ओहि फूलक
हमरा बौक बनल देखि ओ भभाकए हँसैत अछि

बुझबैत अछि जड़ि-शाख, लता-पातक औषधिगुण
वन्यपशु, जीव-जन्तु आ मनुक्खक
नियम-बद्ध सहअस्तित्वक रहस्य
कोना ढाठक घेरामे लोक रहैत अछि निचैन सूतल
कोना पीठ आ पेट परसँ सांप ससरि जाइत छैक
कोना भयमुक्त छोट-पैघ जानवर
एक्के घाट पर पिबैत अछि पानि

ओ तोड़ि आनैत अछि
कँटही गाछक छीप परसँ एकटा कोंड़ही
मसोड़ि कए दैत अछि मुँहमे ठूसि
हमर मुँहसँ बहराइत अछि- ई तऽ बड़ मीठ छैक

ओ एकटा फऽड़ तोड़ि कए दैत अछि
-एकरा खा कए देखिऔक
एक्को बेर खाँसी नहि हैत

जाड़क ओहि दुपहरियामे
ओकरा संग एम्हरसँ ओम्हर होइत
नहि जानि कतेक ऊपर चढ़ि गेल छलहुँ
बिसरा गेल छल हँफनी-खाँसी
पयरो आब थिर भऽ गेल छल

ओ हमरा उल्लसित देखि कहैत अछि
चलू आब थोड़बे दूर छैक चोटी
चढ़ाइयो बेसी नहि छैक
जड़ी-बूटी, शाल-देवदारसँ भरल
जंगलाह रस्ता पर चलब बड़ नीक लागत
साँझो पड़बामे एखन बड़ देरी छैक

हम अपन गुरुआइनिक संग बढ़ऽ लगैत छी
पहुँचि जाइत छी पर्वतशीर्ष पर
देखाइ पड़ैत अछि स्वच्छ-नील पानिसँ भरल बड़का झील
तृणरहित सुचिक्कन मयदान·
कहैत छियैक हमरा एतय फुटबौल खेलैबाक मोन होइत अछि

ओ खिलखिलाइ लगैत अछि
कहैत अछि- एतय रहल रहथि द्रौपदीसमेत पाण्डव
बितौने रहथि मासक मास
-ओतय छैक भीमक पयरक चेन्ह
-ओहि पाथर पर बैसैत छलीह द्रौपदी
-ओ रहल पाण्डव-शिला
होयताह खेलाइत पाँचो भाइ ओही ठाम
साँझ होइ पर रहैक
मुदा ओ गिरिकन्या घुरऽ केर नाम नहि लैत छलि
ओकर आँखिमे ठस्सल शैल-सुषमा देखि
हमरो ठकबिदुरी लागल रहि गेल छल □

भारती मंडन : मार्च 1998

अहाँ कोम्हर नुका गेल छी प्रभासजी

एहि पार हम
ओहि पार अहाँ
बीचमे विद्यासागर सेतु

ई स्फूर्तिदायक व्यवधान
कतेक नीक लगैत छल
हमरा दुनूकेँ प्रभासजी

किछु किलोमीटर दूर रहियो कऽ
हम एक-दोसरकेँ
हुलकी मारि सकैत छलहुँ
चओरक बथवार जकाँ सोर पाड़ि सकैत छलहुँ

नेशनल लाइब्रेरीक सान्हि
आ चिड़ियाघरक झोंझ
हमरा सभक आवाजकेँ
नहि रोकि सकैत छल
पुलक नीचाँसँ कलबो बहैक पानि
शिवपुर आ अलीपुरक स्नेह-बन्धकेँ
तोड़ि नहि सकैत छल

पयरे बौआइत
जखन-तखन अहाँ गाबऽ लगैत रही
'राजा पोखरिमे कतेक मछरी'
आ हम कहैत रही
ई राजाक पोखरि नहि
हुगली थिकैक, प्रभासजी
एतय कोनो माछ पर हाथ नहि लगबियौक
पहिने नागार्जुनक 'तालाब की मछलियाँ'
आ राजकमलक 'मछली मरी हुई' केँ वेकछाउ
तखन ककरो पर नजरि गड़ाउ

अहाँ हँराऽ लागैत रही
आ लागैत रही आगू बढ़ऽ
ऊर्ध्वमूल पुलक अष्टावक्री घुमावमे
अपस्याँत होयवाक लेल

हम ऑफिसक थाकल
ठेहुनक दर्दक मारल
तामसेँ चलब छोड़ि बैसि जाइ
आ अहाँ ओम्हरसँ
कोनो नव कथानक नेने पहुँचि जाइ
भऽ जाइत रहय शुरू कविता आ कथाक प्रेम-कलह

आब ओहि घुमावमे
हम एकसर पड़ि गेल छी प्रभासजी
बेशीकाल विपरीते दिशामे बौआइत छी
नहि होइत अछि आब ठेहुनमे दर्द
अथवा अहाँ पर तामस
अन्धकारक ई यात्रा बड़ कष्टकर लगैत अछि
अहाँ कोम्हर नुका गेल छी प्रभासजी □

भारती मंडन : मार्च 1999

अहाँ विदा भऽ गेलहुँ यात्रीजी

अहाँ विदा भऽ गेलहुँ
ई हमरा फोन, टी.वी., रेडियो आ अखबार कहलक
पोथीसँ ठसाठस भरल कोठलीमे
अहाँकें कनझप्पा सम्हारैत ओ हमरा देखा गेल
ईहो कहलक जे राजकीय सम्मानक संग
अहाँकें ओहि तरौनीमे जरायल जायत
जतयसँ अहाँ कहियो भागि गेल रही
आ भोगैत रहि गेल छलीह काकी

ई सभ समाचार नीक लागल
मोन पड़ि गेल कोना अहाँ एहन-एहन समाचार
चौरंगीक मक्खूरामक दोकानसँ कीनि कए
झोड़ामे भरि लैत रही आ
गीतेश, नेवाड़ अथवा कीर्त्तिनारायणक डेराक
अपन चटिसारमे ओकर कपाली व्याख्या करैत रही

आइ अहाँ रहितहुँ
तँ अपन मृत्युक समाचार वला कटिंग सभ नेने
डेरा पर अबितहुँ
समारोहमे हमरो संग लऽ जा
अपन शवक राज्याभिषेक देखबितहुँ
कहितहुँ- देखलहक कीर्त्ति
कोना सभकें ठकि लेलकनि ठक्कन मिसर
ई यात्री नागार्जुन की कहियो मरतनि

अहाँ मरब नहि से हम जानैत रही
अहूँ जानैत रही
आइ अपन पजरैत चितो परसँ
जँ 'घोर औघड़ी अभिव्यक्ति' कऽ रहल छी
मृत्युकें ठेंगा देखा रहल छी
तँ हमरा आश्चर्य नहि होइत अछि

हे हमर पिता
सौंसे देशक नागाबाबा
यात्री-नागार्जुन
हमरा ई बूझल अछि
हमरा सन अहाँक कतेक सहस्र पुत्र आ पुत्री
देशक सभ कोनमे पसरल छथि
सभ अहाँ पर एकसमान दावा ठोकनिहार
सभक अहाँ पर सर्वाधिकार
सभ अहाँ लेल आतुर

सभक चूल्हि पर अहाँक लेल चाहक केतली चढ़ल
सभक भनसाघरमे
अहाँक प्रिय व्यंजन आ माछ प्रतीक्षा करैत
आ
सभक घरमे अहाँ विराजमान
चाहक चुस्की लैत
नाम लऽ गृहिणीकें 'ई ला', 'ओ ला' कहैत
सभक धिया-पुताकें संग लऽ
गामक चौहद्दी देखबैत

काश्मीरसँ कन्याकुमारी धरि पसरल
अहाँक सभ संतानकें लगैत छनि
अहाँ सभसँ बेशी हुनके मानैत छियनि
हमरो लगैत अछि

हे अनिकेत अनिर्बन्ध यात्री
हमरा ई तऽ बता दितहुँ
कतऽ जा सिखलिऐक
ई अद्‌भुत जादूगरी
ई सम्मोहन-मंत्र
ई स्नेह-वृष्टिक कला □

मिथिलांचल सम्पर्क : 1999

के थिकेँ तोँ

के थिकेँ तोँ
कोना अइलेँ एहि अभेद्य अरण्यमे
के तोहर छउ मंत्र-दाता
के तोहर मानुष्य-हर्ता
आकि छेँ तोँ भेदिया बनि
सम्मिलित एहि वन्यमे

हम कहलिअइ
हम ने कोनो भेदिया वा आदिमानव
छी ने मुनि अथवा यती
भेल यंत्रादेश पर छी
एहि अरण्यक पथी
यात्रापथ छल हमर आकाश
ग्रह-उपग्रह हमर आखेट छल
अंतरिक्षी भेद जानब
दूरवीक्षी ध्येय छल

गेल छी भू पर उतारल
सर्वेक्षणी उद्देश्यसँ
जोहि आनऽ सम्पदा
एहि भूतली परिवेशसँ

छी अहीं केर
दृष्टि
सृष्टि
अनुपूरक
सखा
यांत्रिक प्रतिरूप

रहऽक अछि संग-संग अहीं केर
करऽक अछि संभव असंभवकेँ कठिन उद्योगसँ
नाश वा निर्माण-जे चाही दुनूक सहयोगसँ

हमर ई पूर्वसंचित, भावोद्रेकी आत्मपरिचय
ने ओकरा विस्मित कैलकैक, ने विचलित
जेना ओकरा बूझल छलैक
हमर कृत्रिम विवेकक सीमा
जेना ओ जनैत छल
ओकर सभ प्रतिवाद जयतैक व्यर्थ
जा धरि 'कैसेट'मे भरलहा वाक्य सभ
भऽ नहि जयतैक समाप्त

एहि सम्पूर्ण अवधिमे
ओकर आग्नेय दृष्टिसँ
बहराइत रहलैक स्फुलिंग
आशंकाक धुआँ
किन्तु हम जहिना चुप भेलहुँ
ओ देखऽ लागल चारो भऽर
करुणार्द्र भऽ उठलैक ओकर आँखि
फुटलैक नहि मुँहसँ
एको टा प्रतिवाद अथवा स्वीकारक बकार
श्लथ पयरेँ
नहुँ-नहुँ ओ भऽ गेल अदृश्य
नहि जानि कोम्हर □

अंतिका : जुलाइ सितम्बर 1999

रोज भोरमे

वड़ीकाल धरि
रोज भोरमे
चोंच मारइए
नऽव कांच पर
छोटकी फुद्दी

चिं-चिं-चिं
टुक्-टुक्-टुक्
फुदका-फुदकी रोज सुनइ छी
रोज जोहाइछ पुरना गंजी झाँपऽ सीसा
तमतमाइत छथि कर्कश स्वरमे कोकिल-कंठी

ककर-ककर फोड़लकइ अइना ई जरलहिया
रोज सुनइ छी
आइ ने छोड़बनि नहि आओत जैं कांटी-जाली
आइ ने छोड़बनि एक्को छेद रहल जैं खाली
रोज सुनइ छी

सूर्य जखन उगिते रहैत अछि
रोज आबि फुद्दी बैसइए
सिरमामे राखल टेबुल पर झिंझरी बाटें
फुदकि-फुदकि हमरा उठबइए
रहि-रहि कए जुल्फी नोंचइए

हम अनठौने पड़ल रहइ छी
फुद्दी आ पत्नी
दुनू केर आँखि मूनि लीला देखइ छी
रोज भोरमे
वड़ी काल धरि □

अंतिका : सितम्बर 1999

रूसाफुल्ली

हमर-अहाँ केर देखा-देखी
मुँह लटकायब सीख गेल अछि
अपन बछरू

माय थुथुनसँ देह हँसोथइ
ओ नहि डोलय
सींग सटा गुदगुदी लगाबइ
आँखि ने फोलय

चुम्मा लइ छइ
नाक धसइ छइ
हँफिया-हँफिया पुचकारै छइ
गलफड़सँ गाँउज चुवइ छइ
किन्तु ने ओ कनियों टसकइ छइ

देखि-देखि ई रूसा-फुल्ली
हम चिन्तित छी

दूध भरल थन नेने
गैया रँभा रहल छइ
अनमनाह बछरू
भूखल रहि सता रहल छइ □

अंतिका : सितम्बर 1999

प्रियंवद

पहिने रखथा लेलियैक हथियार
नष्ट कऽ देलियैक प्रतिरोध करऽक शक्ति
मिझा देलियैक चरित्र आ आदर्शक आगि
फेर
देलियैक पहिरा
क्षयरोगिया वस्त्र
जाहिसँ छिजि जाय काया
फूटइ नहि बकार
माँगय नहि रोटी
कऽ नहि सकय
छीनल जाइत अधिकारक लेल प्रतिवाद

प्रियंवद!
कतयसँ सीखि आयल छी
एहन मीठ भाषा
ई वशीकरण-मंत्र
ई सम्मोहन-कला
बड़का बड़का विषधरकेँ लैत छी बना
पछलगुआ
जंगलकेँ बदलि दैत छी अभयारण्यमे
ऋद्धि बनि जाइत छथि अनुगामिनी
सिद्धिकेँ बना लैत छियनि अंकशायिनी

हे हमर सखा प्रियंवद!
हमरा तँ चकबिदोर लागल रहि जाइत अछि
अहाँक बहुरूपिया लीला देखि □
अंतिका : सितम्बर 1999

स्वप्नजा अनिन्दिता स्मिता

कहियो पितृसवर्गमे लागि गेल छल आँखि
आ सपना देखैत
पहुँचि गेल छलहुँ
'निआग्रा' जकर अट्टहास करैत जल-प्रपात पर
अनवरत प्रस्फुटित होअए वला पारिजात
कऽ देने छल हमर आत्माकेँ सुगन्धि-स्नात

हम महमह करैत
नहि जानि कखन धरि
विचरण करैत रहि गेल छलहुँ
स्नायु-मुक्त आकाशमे
नहि जानि कहिया धरि
छानैत रहि गेल छलहुँ गिरि-प्रान्तर कस्तुरी-मृग जकाँ

आइ जखन कि हम
अपना जनैत जागल छी
अहाँकेँ पबैत छी
अपन निर्दोष चंचलताक संग
मृग-शावक जकाँ ठाढ़ि
हाथमे नेने जुआरेज, मेक्सिको, एल पासो, टेक्साजक
हवाइ जहाजसँ लेल फोटोग्राफ

होइत अछि हमर सपनामे देखल दृश्य सभ
अहाँक कैमरामे कोना पहुँचि गेल
आ कि हम एखनहुँ सूतल छी

हे हमर स्वप्नजा अनिन्दिता स्मिता
अहाँ कनेक हमरा छूबि कए तऽ बताउ
बाबूजी, अहाँ सरिपहुँ जागल छी □
जानकी : अक्तूबर-दिसम्बर 2001

सर्वमंगला सी.टी.बी.टी.*

बन्धु आउ
ब्रह्माण्डीकरणक एहि ब्रह्म-मुहूर्त्तमे
'ग्लोबल'- समृद्धिक लेल
हमरा लोकनि
परमशक्ति- स्रोत पंचदेवताक* पूजा कए
अणुताप-निवारिणी सर्वमंगला सी.टी.बी.टी.*क आवाहन करी

शस्त्र-समर्पण कए आ हस्ताक्षर-युक्त संधिपत्र चढ़ा
आराधना करिअनि
अन्तरिक्षवासिनी
सृष्टि-स्थिति-विनाशक देवी
भेद-द्वेषमयी प्रक्षेपास्त्री अण्वेश्वरीक

प्रसन्न करिअनि
शरण्यकेँ सुरक्षा प्रदान करऽवाली
अमेय विक्रमा क्रूराकेँ
ओएह हरतीह
हमरा लोकनिक शत-सहस्रवर्षीय दारिद्र्य
होअए नहि देतीह कहियो
आक्रमित
दिऔतीह भय-मुक्ति
करतीह सनाथ

हमरा सभ रहल छी सभ दिनसँ परोपकारी
दैत रहल छी
अपन अस्थियो हथियार बनयबाक हेतु
रक्त आ माँसु दए
करैत रहल छी
बुभुक्षितकेँ तृप्त
आइ कियैक भऽ रहल छी किंकर्त्तव्यविमूढ़?

आउ,
करी अपन-अपन वल्कलक त्याग
अपन देश
अपन देह
अपन आत्माक भांज
होइत जाइ विखण्डित
आ प्राप्त करी एटमी विश्वरूपाक सायुज्य ☐
भारती मंडन : जुलाइ-मार्च 1998

* अणुशक्ति सम्पन्न पाँचो देश जे संधि-पत्र पर हस्ताक्षरक लेल दोसर देशकेँ विवश कऽ रहल छथि।
* 'कम्प्रीहेंसिव टेस्ट बेन ट्रीटी' - परमाणु परीक्षण निषेध-संधि

झुनझुनावाला

माथमे टोपी
पयरमे घुंघरू
एक हाथमे बाँसुरी
दोसरमे झुनझुना

नर्तकक एहि मुद्रामे
रस्ता-चौबटिया
गली-कुच्ची
दोआरि-दोआरि
घूमि-घूमि
ओ बजबैत रहैत छल झुनझुना
ठाढ़ भऽ जाइत छल
कोनो कोनटा, कोनो दलान, कोनो इनार लग

कोरक बच्चा
कानब बिसरि जाइत छल
झुलनामे फेंकाइ लगैत छल नवजातक पयर
बचकुन सभ कऽ दैत छलाह खाली सभ खाट

जोहाइ लगैत छलीह माइ बहार करऽ पाइ
तोड़ल जाइ लगैत छल जुट्टीसँ सीस
बहराइ लगैत छल मौनीमे धान
हुलकी मारैत रहि जाइत छलीह कनिञा
बूढ़ि आ पुरनिञा

आ ओम्हर
होअए लगैत छल हल्ला
पहिने हमरा, पहिने हमरा

सोझ सपाट गमार सन लागऽवला
ओ झुनझुनावाला

स्वयं बनल रहैत छल तमाशा
धियापुताक लेल
बड़ी-बड़ी काल धरि
ओ नाचैत रहैत छल
ताल पर थिरकैत रहैत छलैक
ओकर पयर
बाजैत रहैत छलैक घुंघरू
बजबैत रहैत छल बाँसुरी

कतेक युग बीत गेल
मुदा एखनहुँ भरमौने रहैत अछि
ओ झुनझुनावाला

आ
निस्तब्ध रातियोमे
सुनाइ पड़ैत अछि
ओकर घुंघरू
ओकर बाँसुरी
ओकर झुनझुना
ओकर पदचाप
संगीतमय बनौने रहैत अछि
ओ हमर एकान्तकेँ □
वैदेही : सितम्बर-दिसम्बर 2000

मरघट बनल मएदानमे

निस्तब्ध रातिमे
डोलैत अछि धरती
आ क्षणांशमे
परिणत भऽ जाइछ
ध्वंशावशेषमे
गामक-गाम
जिलाक- जिला
ढहि जाइत अछि
सभ गढ़ आ किला

क्षत-विक्षत अंग-प्रत्यंगकेँ
चुनि-बीछि-जोड़ि कए
देल जा रहल अछि शरीरक रूप
गनल जा रहल अछि लहास

मरघट बनल मएदानमे
भऽ रहल अछि सामूहिक दाह-संस्कार
गामक एकमात्र जीवित व्यक्ति
पथरबगुना बनल अछि ठाढ़

एहि सभसँ अनजान
एकटा अबोध बालक
कँपक आगूमे
कऽ रहल अछि
अपन मायक घुरि अयबाक प्रतीक्षा □
रचना : अक्तूबर-दिसम्बर 2001

एनम् छिन्दन्ति शस्त्राणि, एनम् दहति पावकः

एकटा मोटर साइकिल
एम्हरसँ बहराइत अछि
ओम्हरसँ एक टा ट्रेलर
रामनाम सत्त... कहैत सिमरिया दिस जाइत अछि

मोड़ पर
अजानक गाछ तऽर एकटा वृद्ध
'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि....' पढ़ि
ओहि बिनु पम्हयला किशोरकेँ श्रद्धांजलि दैत छथि
पुलिस केर पहुँचऽसँ पहिनहि
दाह-संस्कार भऽ जयबाक बेगरता बतबैत छथि

हम अपन दलान परसँ
एहि प्रकारक हत्या, शवयात्रा आ श्रद्धांजलि
प्रायः रोज देखैत छी
रोज भोरमे मित्रक संग चाह पिबैत
अखबारक पन्ना सभ उनटा-उनटा कए
बढ़ैत हत्या आ अपराध पर चर्चा करैत छी

जोहैत छी
मृत्युक आतंकमे जीबैत मनुक्खक लेल
जीवनक अर्थ
सोचैत छी
शस्त्रक छायामे शास्त्र कतेक भऽ गेल असमर्थ
कियैक ओकरा लेल भऽ गेल छैक जरूरी देहमुक्ति
जे नहि कऽ सकैत अछि यंत्रमुक्ति
कियैक गीतासँ अर्जित विवेक
कोनो मदतिं नहि करैत छैक
कियैक ओ बूझऽ लागल अछि
आत्माकेँ वध्य आ दहनशील □
रचना : अक्तूबर-दिसम्बर 2001

निन्न

राति भरि सूतब
अथवा भरि राति सूतल रहब
ककरा नहि नीक लगैत छैक
राति भरि सूतब आ सपना देखैत रहब
-ई विचार केहन उत्फुल्ल करैत छैक मोनकेँ

मुदा राति कोना होइत छैक
कखन होइत छैक
लोक कोना सुतइ अछि
सुतलामे केहन लगैत अछि
ई हमरा नहि बूझल अछि
की अहाँ हमरा बता सकै छी

मुदा अहाँ तऽ स्वयं सूतल आ भयाक्रान्त लगैत छी
अहाँ कोना कऽ सकब हमरा भयमुक्त
नहि, नहि
अहाँ दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, प्रकृतिशास्त्री
बला मुद्रा नहि अपनाउ
अथवा ओझा गुनी ज्योतिषी बला दिअऽ नहि समाधान
हम आइ धरि नहि देखने छी
लोककेँ निन्नसँ जागैत
ओ कहियासँ सूतल अछि
सेहो नहि अछि ज्ञात

भ्रमवश अहाँकेँ जागल बूझि
एतेक बात कहि गेलहुँ
ओना हमहुँ जन्मेसँ सूतल छी
आ सुतले-सूतल जोहि रहल छी शंकाक समाधान
अपनाकेँ जागल बूझि
जोहि रहल छी सूतल लोक
निन्नोमे छी हम निद्राविहीन □

कर्णामृत : अक्तूबर दिसम्बर 2002

ओ आ हम

ओ खेलाइत छथि
शतरंज
हम लिखैत छी
कविता

हमरा लोकनिक कार्यव्यापारमे नहि अछि
कोनो समानरुचिता, तारतम्य
अथवा स्वार्थयोग
तथापि हम दुनू गोधियाँ छी

ने हमरा बिसात वा शह-मात बूझल अछि
ने हुनका राग लय छन्द
बिनु बुझने
हम हुनका महान खेलाड़ी कहैत छियनि
ओ हमरा महान कवि

हम दुनू
अहो रूपं अहो ध्वनिः वला पारस्परिक अभ्यर्थनासँ
संजीवनी प्राप्त करैत छी
आ एक-दोसरक अभिनन्दनक जोगाड़मे
लागल रहैत छी

ललाट पर गोधवा नेने छी बड़का-बड़का उपाधि
पागसँ पनही धरि पर चढ़वा नेने छी
प्रशस्ति-लेप

ओ हमरा लेल जोहैत छथि मंच
हम मंचक लेल भाषण लिखि
गढ़ैत छी हुनक छवि
ने हुनका सन नेता
ने हमरा सन कवि □

रचना : जुलाइ सितम्बर 2002

गिल्लू

कहियो घास-पातक अऽढ़सँ
कहियो कोनो झाड़ीक दोगसँ
ओ हमरा
रोज आबि कऽ देखैत छलि
आ फेर जंगल दिस घुरि जाइत छलि

पहिने हमरा भेल
ई कोना सीखि गेल
मैथिल कन्या वला
हुलकी मारि चोट्टहि घुरि जयबाक कला
मुदा ओ जखन बूझि गेलि
ई व्यक्ति घुरि कए कतहु जाइ बला नहि
तऽ भऽ गेलि निधोख
आब छोड़ि देलक जोहब कात-दोग
सोझे चलि अबैत छलि 'लॉन'मे
जहिया जेना होइत छलैक मोनमे

खेलाइत रहैत छलि बड़ी-बड़ी कालधरि
एम्हर-ओम्हर
देखि हमरो लैत छलि कखनो काल कनखीसँ

ई क्रम चलैत रहल कतेक मास
ओ आब रहइ लागलि हमरे लग बेसी
हम स्मिताकेँ बजा कए कहलियनि
कनिआ, हमरा-लोकनिकेँ तऽ आब घुरबाक अछि
मुदा छोड़ि कए जा रहल छी
अहाँ लग ई दुलारु बेटी
हमरा सभ जतय रहब
अहाँ-लोकनि मोन पड़ब
मोन पड़त अहाँक ई चंचल प्रतिवेशी □

घर-बाहर : जून-सितम्बर 2002

रागशून्य ग्लोबल हृदय

नदी एहि पारक अछि
पानि ओहि पारक
पानि प्रत्येक वर्ष सिमान तोड़ैत अछि
एहि अथवा ओहि पारकेँ मासक-मास
गोंतने रहैत अछि

ई जल-प्लावन थिक आकि जलाक्रमण
-एहि तथ्यकेँ केओ बूझय
ओहिसँ पहिनहि उठि जाइत अछि विवाद

एक देशक आरोप छैक
'वाटरगेट' खोलि देल गेल छैक
दोसर देश कहैत छैक
बर्फ बेशी पिघलि गेल छैक

हे हमर प्रिया
हमरा कहिया धरि
प्रतीक्षा करऽ पड़त
राष्ट्रीय समझौता आकि अन्तर्राष्ट्रीय हस्तक्षेपक
अपन अथवा अहाँक पारगमनक लेल

हमरा दुनूक मध्य
आबि कए ठाढ़ि भऽ गेल अछि
-विदेश नीति
-अन्तर्राष्ट्रीय सीमा
-राजनयिक कुटिलता
हाथमे आबि गेल अछि खजुरी
एहि विश्वग्रामक एक बंकरसँ बहरा कए
दोसर बंकरमे
'निर्गुन' गाबऽक लेल

हे हमर संगिनी
हमरा लोकनि
एहि रागशून्य ग्लोबल हृदयमे
कहिया धरि जोहैत रहब
अपन प्रेमक सगुण-साकार शिशुक लेल
अनुरागक रंग
कहिया धरि सोझराबैत रहब
प्रकृतिक नाम पर होइत राजनीति
आ राजनीतिक प्रकृतिकेर ओझरायल ताग
अथसँ पहिनहि कोना कऽ ली इतिकेँ स्वीकार

आउ
हम सभ एहि सूचना-प्रसूत ग्लोबक भेदन करी
आ जोही
ओहि ब्रह्माण्डकेँ
जे अपना दुनूकेँ प्रेम करऽ सिखौने छल
आ हमरा सभक माथ पर
आशीर्वादी वितान तानने छल ☐

खोज-खबरि : जनवरी 2002

एकटा अकर्मक कविता

बहुत दिनसँ चाहैत छी किछु करी
बहुत दिन बीति गेल सोचऽमे
ई करी कि ओ करी
एना करी कि ओना करी
कोना करी कि सबसँ ऊपर रही

आब सोचैत छी
एतेक नहि सोचितहुँ तऽ नीक छल
किछु करिते रहब ठीक छल

ओना तऽ आइ
अकर्मको करा दैत छैक अर्थ-बोध
-ज्ञान-विस्तार
-प्रभाव-वृद्धि
बढ़ा दैत छैक मोल
दैत छैक समृद्धि

ई भाव अथवा विचार
कोनो दार्शनिक
अथवा कोनो दीर्घसूत्री केर भऽ सकैत अछि
अथवा भऽ सकैत अछि ई गहन निराशाक परिणाम
अथवा कोनो अपाहिजक पश्चातापसँ
भेल हो ई उत्पन्न
अथवा भऽ सकैत अछि
कोनो पराजित आत्मा
एही सोचसँ कऽ रहल हो आत्मसर्पण

लोक कहैत अछि
कोनो बात सोचने-विचारने बिना नहि करी
ई तऽ नीक बात
किन्तु एतेक सोचबो नहि नीक
जे निष्क्रियता विचार पर पसरि जाइ
आ समस्या मुँह बाबि
'कारगिल' जकाँ भऽ जाइ ठाढ़

अथवा जा धरि अहाँ पनही जोही
सौंसे मिथिलाकेँ गोंति दैक बाढ़ि

एकर अर्थ ई नहि
जे अहाँ हड़बड़ा कऽ पहिरि ली पनही
केहनो परिस्थितिमे पयर आ पनही केर
नजदीकी सम्बन्धकेँ नहि बिसरबाक चाही
पयर भले अड़ांची अथवा माथ पर राखल रहय
पनही सदैव हाथमे राखी

एहि आपातकालीन अस्त्रसँ
सूतलो-सूतल भऽ जाइत आत्मरक्षा, सीमा-सुरक्षा
भऽ जाइत बचाव डकैती-हत्या/बलात्कारसँ
सुधरि जाइत देश-विदेशसँ सम्बन्ध
हारि गेलाक बादो
भेटि जाइत बहाना हाथ बाझल रहबाक

निम्न लोककेँ आश्चरितये नहि
आत्मविश्वासो दैत छैक
विकट-सँ-विकट समस्या केर कऽ दैत छैक समाधान
सूतल रहऽ वला लोक
जा धरि टीसन पहुँचैत अछि
जा छुकल रहैत छैक गाड़ी
आ ओ लूटि, दुर्घटना बम-बिस्फोटसँ बचि जाइत अछि
-विधानसभा आ संसदक जुता-जुतौअलिसँ
बचा लैत अछि अपन माथ

आदमीकेँ अपन सुरक्षा लेल
पुलिसक जीप पर नहि
अपनहि निम्न पर निर्भर रहबाक चाही
निम्नहिमे जोहबाक चाही
सभ वैश्विक समस्याक राष्ट्रीय समाधान
ओना तऽ अहाँ बुझिते छी
सभ करैत छथि भगवान □
भारती मंडन : जनवरी-सितम्बर 2000

धोधरिसँ हुलकी मारैत करुणा

एहि असंख्य धोधरिवला
प्राणशून्य, श्वेतांग महावृक्षक अन्तः प्रकोष्ठमे
वास करैत अछि विकसित आ अविकसित
छोट आ पैघ हाथ-पयर वला आ लुल्ह-नांगड़
कुदकऽवला आ सोझे झपट्टा मारऽवला
अनेकानेक थलचर आ नभचर

सभकेँ बूझल छैक
एहि महावृक्षक अतीत आ वर्तमान
सभकेँ देखल छैक एकर
भविष्य पर लागल पूर्णविराम

कियैक भऽ गेल छैक एकर हृदय
एतेक प्रशस्त आ प्रबुद्ध
किएक अपनाकेँ बोधिवृक्ष घोषित कए
ई जोहबा रहल अछि कोनो सिद्धार्थ
ककरोसँ नहि छैक अज्ञात

एकर शीतल छाया
सभ दिन बाँटैत रहल छलैक चिरनिद्रा
एकर डारि, एकर फऽड़, एकर पात
सभ दिन करैत छलैक विष-स्राव
तथापि एकर चारूकात
होइत रहैत छलैक ठेलम-ठेल
देखऽ लेल सांप आ बिज्जीक खेल

आब जखन कि डारि पात छाल छाया
सभ एकरा देने छैक छोड़ि
विष गेल छैक सुखा
एकरामे जागल छैक जीवमात्रक लेल दया
सड़ि-सड़ि कए धोधरि भऽ गेल एकर हृदयसँ
हुलकी मारैत रहैत छैक क्रूरताक बदलामे करुणा □
समय साल : जून-जुलाइ 2002

रिनियाकेर नोर

जे अघटनीय छल
घटल
पौरुषक प्राचीर
रेतक भीत जकाँ
ढहल

ई कुहेस सहजहि छटऽवला नहि अछि
अहाँ कखन धरि करब
सूर्यक उगबाक प्रतीक्षा
कतेक करब मित्रमंडलसँ रोशनीक याचना
कहिया धरि झुकौने रहब माथ
सहैत रहब यातना

उठू
मलबामे जोहू लहास
के सभ छथि बाँचल ?
के भेलाह हमला केर ग्रास ?
ऐश्वर्यक गनगोआरिक सभ टांग
कोम्हर जाकऽ फँसल ?
शौर्य-सौधक कलश
कोम्हर जा कऽ धसल ?

हम सभ छी अहाँ केर रिनिया
सेवामे हाजिर रहऽवला लोक
दुखक एहि बेरमे
स्वीकार कैल जाय
हमरो सभक नोर □
रचनाकाल : 09 नवम्बर 2002

गुड़ियाक संग गुड़िया जकाँ खेलाइत

ओ आयलि
हमर आंगुर पकड़ि
कोनो अनजान देशक
अज्ञात जंगलमे लऽ गेलि

ओतय बहुत रास चिड़ै-चुनमुनी
कौआ-मैना देखौलक
आ केम्हरो ससरि गेलि
हम भुतिआयल बच्चा जकाँ अनभुआर जंगलमे
अपरिचित जीव-जन्तु पशु-पक्षी कें देखैत छी
आ डेरा कऽ गुड़िया-गुड़िया रटऽ लगैत छी
किन्तु ओ नहि अबैत अछि
तकर बाद हमरा की भेल
से नहि जनैत छी

बड़ी कालक बाद
हमरा होस अबैत अछि
देखैत छी
ओ सौंसे देहकेँ हँसोथि रहलि अछि
हमर माथकेँ कोरमे राखि
की-कहाँदन गाबि
हमरा पोटि रहलि अछि

हम बिसरि जाइत छी जे ओ हमरा
एतय छोड़ि कतहु पड़ा गेलि छलि
अथवा ओ ई स्थान नहि अछि
जतय रोज हमरा
छड़ी पकड़ि लऽ जाइत छलि

हम पहिने कौआ-कऽर मैना-कऽर खाइत छी
आ गुड़ियाक संग
कोनो गुड़िया जकाँ
खेलऽ लगैत छी □
घर बाहर : अप्रैल जून 2003

ओ जनमि गेल छथि

जगदा बाबू कहलनि
अहाँ जिनका जोहि रहल छियनि
ओ जनमि गेल छथि

नीक कुल नीक परिवेश नीक ग्रह-नक्षत्रमे
भेल छनि हुनक जन्म
मुदा कतय, कोन गाम अथवा कोन देशमे
से हमरा नहि बूझल अछि
हम एतबा धरि कहि सकैत छी
ओ अहाँकेँ भेटताह अवश्य

हमरा भेल
ओ अथाहमे टेलि सागर-मंथन करऽ कहि रहल छथि

प्रकटतः कहलियनि
हम नोनछर समुद्रक कातमे रहैत छी
बहुत रास जीवजन्तु, मत्स्य, कूर्म, वराहसँ
प्रायः रोज होइत अछि साक्षात्कार
सभ बुझाइत छथि प्रबल प्रतापी
कोना बूझल जाय जे ओहिमे के छथि अवतारी

ओ कहलनि
नहि-नहि अहाँकेँ किछु बुझबाक नहि अछि
मात्र अन्वेषणमे लागल रहबाक अछि

हम माथक घाम पोछि
हुनका हाथ जोड़ैत छियनि
आ यात्रा पर बहरा जाइत छी

आगाँ छल जनसमुद्र उमड़ल
धक्कम-धक्कामे एम्हरसँ ओम्हर फेंकाइ लगैत छी

हमरा तलमलाइत देखि
केओ अपन हाथ पकड़ाबैत छथि
आ भीड़सँ बाहर लऽ आनैत छथि
हमरा प्रकृतिस्थ होइत देखि
ओ आगू बढ़ि जाइत छथि

हम कृतज्ञता एवं विस्मयसँ भरि
सोचऽ लगैत छी
की ओ वैह तऽ नहि छलाह
जिनका हम जोहि रहल छलियनि
आ कि वैह
सात समुद्र पार कए
हमरा जोहऽ लेल
ओहि जन-समुद्रमे प्रवेश कऽ गेल रहथि □

रचनाकाल : 5-सितम्बर-2003

उत्तरआधुनिक कारुणिक

प्रशिक्षण पाबि ओ भऽ गेल छथि
अश्रु बहयबाक कलामे प्रवीण
कतय कोना कतेक बुन्न खसयबाक थाही
एहिमे भऽ गेल छथि धुरीण

आतिथेयक दर्जा देखि
तय करैत छथि शोकाचार
घटबैत-बढ़बैत रहैत छथि संवेदनाक अनुपात
स्थान काल पात्रक अनुसार
अपन कूटनीतिक विलापसँ
ओ गुंजित कैने रहैत छथि सार्क आ न्यूयार्क

हमरा भ्रम छी सोझ
दहो-बहो कानऽ वला लोक
कानिते रहैत छी सदिखन
हरदम व्यापने रहैत अछि शोक

कहियो भोपाल, कहियो गोधरा-गुजरात
आइ अफगानिस्तान तऽ काल्हि इराक
कैने रहैत अछि उद्वेलित
होइत रहैत छी अनेरे करुणार्द्र

हुनका लेल कारुणिकता छनि उत्तर आधुनिक व्यापार
सम्बन्ध संवेदना सहानुभूति मात्र लोकाचार
हमरा सभक दुःखोदधिमे कतेक अछि नोन
कतेक अछि पानि
ताहि पर करैत रहैत छथि विमर्श
राखैत छथि हिसाब
तर्क करैत छनि सम्मोहित
क्षुब्ध करैत छनि भाव □

रचनाकाल : 11•सितम्बर•2003

साइबर कैफे

हम विश्वग्रामक एहि 'साइबर केफे' मे बैसल
अपन हाथ आ पयरक आंगुरिकेँ
दौड़बैत छी
कोनो संगति, कोनो संगीत
कोनो तूफान, कोनो भूमिकम्पक लय पर
प्रसन्न-पुलकित होइत
तनाओ-शिथिल भऽ
झपकी लियऽ लगैत छी
देखऽ लगैत छी 'रिमोट'- संचालित स्वप्न

-शस्य-श्यामला धरती
-भरल खरिहान
-आ भराइत कोठी

होइत अछि
कतेक धन-धान्यपूर्ण
कतेक भव्य
कतेक आधुनिक
भऽ गेल हमर चओर आ गाम
अपन मड़ैया
अपन गछुली
जे प्रायः रहैत छल उजड़ल
भऽ गेल क्रेहन अभिराम

एतबेमे निर्धारित समय
भऽ जाइत अछि शेष
स्वप्नक बचलाहा अंश
देखब अगिला खेप □

रचनाकाल : 10•अगस्त•2003

ठेहिआएल क्षणमे

ओ हमरा रोज भेंट दैत छथि
कुशल-समाचारक बाद
कविता पर उतरि जाइत छथि
हमहुँ शिष्टाचारवश हँ-हँ कहैत
फेर कहियो कहि आगाँ बढ़ि जाइत छी

हुनक आग्रह आ हमर 'फेर कहियो' केर
निरन्तरता
सिंचित करैत रहैत अछि
प्रातः भ्रमणवला रस्ताक कातमे लागल
ओहि गाछकें
जकर छायामे
घुरैत काल
हम दूनू ठाढ़ भए
घाम सुखाबैत छी

ठेहिआएल क्षणमे
हमरा नीक लगैत अछि
'हाय' 'हलो' केर अंतरंग भऽ जायब
पसेनासँ भीजल शरीर पर
अहेतुक मैत्रीक
सिहकी बहि जायब ☐

रचनाकाल : 10 सितम्बर 2003

हवाक विरोधमे

सिमानक अतिक्रमण कऽ ओहि पारसँ
हुहुआ कऽ अबैत अछि हवा
एहि पार शुरू भऽ जाइत अछि हुआ-हुआ
सन्निपाती प्रलाप-
भेल विश्वासघात/भेल विश्वासघात
धोखा दऽ कैल गेल संहार
सौंसे परोपट्टा निनादित होमय लगैत अछि एहि सोर सँ

प्रभातीक समयमे बाजैत अछि साइरन
सभतरि अदंक पैसि जाइत अछि
गुप्तचरी पर तैनात चिड़ैं सभ पर खसैत छैक वज्र
चिं-चिं चूँ-चूँ काँव-काँवक मध्य
कैल जाइछ संकटकालीन बैसक
आपातकालीन घोषणा

कौआ चिल्होड़ि गिद्ध बाज
सभकें एकजुट कएल जाइत अछि
आक्रमणकारी हवाक विरुद्ध पारित होइत अछि
निन्दा-प्रस्ताव
पवन दूतावास पर विरोध-प्रदर्शन आ धरनाक लेल
शुरू भऽ जाइत अछि तैयारी

हमरो निन्न टूटैत अछि
आँखि मलैत छी, मलिते रहैत छी
बिसबिस्सी सोचऽ नहि दैत अछि
एहि पारक गैस छल बेसी कड़ुआह
आ कि ओहि पारक ई हवा
मोनकें जाँतने रहैत अछि

हम आक्रोशसँ भरि उठैत छी
पजरऽ लगैत अछि सीँसे शरीर
उफनऽ लगैत अछि विचार
जगजगा जाइत अछि मरहन्ना
भरऽ लगैत अछि अखबारक पन्ना

नहुँ-नहुँ
हम अपन एहि व्यक्तिगत संकटकेँ
बना दैत छी वैश्विक चिन्ताक विषय
पक्षमे ठाढ़ होइत छथि किछु लोक
होअए लगैत अछि हवाक ग्लोबल विरोध □
भारती मंडन : जनवरी-सितम्बर 2002

ड्योढक माछ

भाइ,
एखन रातिक तीन बाजल अछि
अर्थात जड़कालमे
एखन भिनसर होयबामे
तीन घंटा बाकी अछि

उठि कए बैसि गेल छी कुर्सी पर
आ टेबुल पर हाथ राखि
करऽ चाहैत छी अपन ध्यानकेँ केन्द्रित
किछु लिखऽक लेल
मुदा ओ चलि जाइत अछि अहाँ पर
बहुत दिनसँ अहाँकेँ नहि लिखि सकलहुँ अछि
सोचैत छी
बैसाड़ीमे किंयैक नहि काटि ली कतिका
लिखि दी पत्र
माङि ली विलम्बक लेल क्षमा

नजरि पड़ैत अछि
कतेक दिनसँ पड़ल अहाँक नाम-पता लिखल
तड़फड़ाइत पोस्टकार्ड पर
चाहैत छी पठा दी एही प्रतीक्षारत समदियाकेँ ड्योढ़
लागि आबऽ अहाँ सभकेँ गोड़
कहि आबऽ अहाँक पोखरिक माछक स्वाद
कऽ आबऽ रोहुक जोगाड़

मुदा होइत अछि
की कहतीह मित्र-पत्नी
सोचतीह दिनभरि तऽ लिखते रहैत छथि झूठ-साँच
ब्रह्मवेलोमे मोन पड़ैत छनि माछ

भाइ
एहि पोस्टकार्डक कपारे छैक टेढ़
एहु बेर बिन लिखले रहि गेल। □
रचनाकाल : 14 जनवरी 2004

वाणी केर वध

हम कहऽ चाहैत छी
मुदा कहि नहि पबैत छी
एहि लेल नहि जे सुनत के
अथवा
जे कान सूनऽ वला छल
पाथर भऽ गेल।

कहब हमर धर्म आ कर्म दुनू अछि
किन्तु जे हम कहैत छी
लोकक दृष्टिमे ओ कविता भऽ जाइत अछि
आ कविता बाजार-भाव घटबैत छैक
राष्ट्रीय संकट बढ़बैत छैक
रोकि दैत छैक देशक निलामी
बढ़बैत छैक भितरिया बात कहि बदनामी
देखबैत छैक अधिष्ठाताकेँ
प्रतिवादमे तनल मुट्ठी
सुनगा दैत छैक आक्रोशक भट्ठी

देशहितमे
बहुमतसँ
तय भेल अछि
वाणी केर वध
हम छी स्तब्ध □
रचनाकाल : 01 जनवरी 2004

सहचरी

हम ओकरा लऽ कए
यात्रा पर बहराइत छी
लोक टोकैत अछि-
अहाँ जकरा बनौलहुँ अछि सहचरी
ओकर नीक नहि
रंग-ढंग
एकर्कँ पड़ाव दिस बढ़ा कए
भऽ जाइत छैक
दोसर केर संग

हम चाहैत छी
हमरा पड़ाव नहि भेटय
ई अनन्त भतरी हमरा नहि छोड़य
हमर यात्रा केर होअए नहि अंत
भोतिआइ नहि दिअए ई
दैत रहय संग □
रचनाकाल : 17 जनवरी 2004

जाड़क रौद

जाड़ भरि हम रौदक प्रतीक्षा करैत छी
गरमीमे
जोहने फिरैत छी छाहरि

एहि उत्तराभिमुख सौभद्र निवासमे
पिता सभ सुविधा जुटा गेल छथि
अपन संतानक लेल
जाड़क रौद छोड़ि कऽ

हमरा सन अबढंगाहक लेल
किछु बेसिये चिन्ता रहैत छलनि
होइत रहनि
एकरा लेल जिनगी चलाएब
भऽ जयतैक कठिन
कटतैक नहि दिन

सभासद हुनका करैत रहथिन आश्वस्त
हमरा सभक रहैत
हिनका नहि हेतनि कष्ट
अनुभव नहि करऽ देबनि
अपनेक अभाव
होइत रहतनि निर्वाह

हम पिताक चिन्ता-सदाशयतासँ
रही नहि अपरिचित
किन्तु अपन व्यवहारसँ कऽ नहि सकलियनि आश्वस्त
जाधरि रहथि जीवित

आब जखन ओ नहि छथि
उतप्त रहैत अछि ई सौध
हम जोहने फिरैत छी छाहरि
पिता जकाँ स्नेहिल उष्मा दिअऽ वला
जाड़क रौद □

रचनाकाल : 11 दिसम्बर 1999

कामनाक अर्ज

अहाँ जखन मंच पर चढ़ैत छी
हाथ फेकि भाषण करैत छी
लोक बजबैत अछि ताली
हम अपन माथ ठोकैत छी

देखल अछि सिनूरक गति
चिन्ता अछि चूड़ीक प्रति
आधा छी बाँचल
अहाँ तकरो फोड़ैत छी

अहाँक परिवर्त्तित रूपसँ
पहिने छल होइत आहत
सौन्दर्य-बोध
वाचाल सुन्दरता उड़ा दैत छल
रूप-चेतनाक होस
आब रहैत अछि
मात्र प्रतीक-रक्षाक चिन्ता
जतबे छी ततबो रही एतबे सिहन्ता
कहुना अहाँक सङ नहि छूटय
मड़बा पर बान्हल गेंठ
एहिना नहि फूजय
अहाँक बनल रहय आसन
हमरो भेटैत रहय अरगासन
बिसरल रही
अपन दुख-दर्द
जीवनक सतरंजीकेँ
भेटैत रहय
अहाँक पाद-स्पर्श
आओर नहि छोट हो
कामनाक अर्ज □

रचनाकाल : 16 अप्रैल 2003

ओकरा रहैक समय

ओकरा रहैक समय
जे खेतसँ बाढ़िक पानि निकलि जयबा धरि
खाद आ बीआ नेने ठाढ़ रहि सकय

ओकरा रहैक समय
जे दू-दू फसिल नष्ट भऽ जयबाक बादो
तेसरक प्रतीक्षा कऽ सकय

ओकरा रहैक समय
मुदा ओकर बेटीकेँ रहैक
सचेष्ट भऽ जयबाक बेगरता
बेटाकेँ रहैक हथिआर उठयबाक धड़फड़ी
बापकेँ रहैक परलोक जयबाक हड़बड़ी

ओकरा रहैक समय
सालक आरम्भ वा अंतक
नहि रहैक ज्ञान
पुस्त-दर-पुस्त सूदि चुकयलाक बादो
मूलक नहि रहैक ध्यान

ओकरा रहैक समय
ने रहैक भरना लागल जिनगीकेँ छोड़यबाक जल्दी
ने बेगारी केर भय □
रचनाकाल : 17 जुलाइ 2003

हमरा अछि चिन्ता

सुनू हमलावर
अहाँ जाहि गामकेँ
जरा कए आएल छी
ओहिमे हमरो छल घर
गरदनि जकर रेति कए आयल रही
छलाह हमरे वंशधर
लहका कए आयल रही
जाहि कागत किताबक अल्मारी
छल हमर सर्वस्व

बस्ती तऽ एहिना उजड़ैत छैक
बसैत छैक
फेर-फेर जनम लैत छैक
इदरिस बलभद्दर सेमुअल करतार
फेर-फेर शुरू होइत छैक
बरहमासा मल्हार

हमरा अछि चिन्ता
अहाँ कोना बाँचब
अपन छोट सन आस्तीनमे
एतेक साँप कोना राखब
कोना करत अहाँक बचाओ
ई भूर वला नाओ
हे हमर हथिआरबन्द बेटा
हे हमर विस्फोटप्रिय बाउ □
रचनाकाल : 10 फरवरी 2004

मिथिलासँ बाहर मिथिला

'मैनहट्टन'क बैटरी पार्कमे बैसल रही
देखि रहल छलहुँ
सुलम्ब श्याम* बन्धु सभकेँ निर्द्वन्द्व घूमैत
सुगठित सुदर्शना श्यामा* सभकेँ सिकरेट धूकैत

होइत छल एकटा हमहुँ सुनगा लितहुँ
देखतियैक
भारतीय धुआँ दक्षिण अफ्रीकी धुआँक संग मिलिकए
भऽ जाइत छैक कतेक प्रगाढ़

भेल एखन धरि नहि गेल अछि हमर
उपनिवेशी प्रजा वला संस्कार
एहि सम्पन्न देशमे आबियो कए
मुँहसँ बहार करऽ चाहैत छी दरिद्राक भाप

रहि-रहि कऽ फूकैत अछि रंगभेदक धाह
एहिसँ तऽ नीक छल
चलि जयतहुँ बंगलादेश
चलि जयतहुँ नेपाल
आओर नहि तऽ मालद्वीप जाकेँ मारितहुँ माछ
अथवा मोरिशसमे चुनितहुँ छाँट

एतबेमे आबि गेलीह पुत्रवधू
कहलनि बाबूजी, एतयसँ चलबाक अछि 'योंकर्स'
उदयन मामा करैत हेताह प्रतीक्षा
माय तरैत हैतीह माछ

हमरा मोन पड़ि गेल सहरसा सतलखा बड़गाम
मोन पड़लाह समधि-समधिन, हुनक स्वजन-सखा
मोन पड़ल मिथिलाक सासुर-समधिआउर
पाहुनक आगाँमे लागऽ वला सचार

गद्गद् होइत कहलियनि- गाड़ी लऽ आउ
कोम्हर गेल अजय
कोम्हर गेलीह अहाँक सासु

पहुँचलहुँ 'योंकर्स'
लागलहुँ दरबज्जा
मुग्ध भेलहुँ देखि डा. यू.के. पाठकक परिसरक साज-सज्जा
स्वागतमे अगुअयलाह किछु मैथिल
किछु अमैथिल
किछु देशी, किछु विदेशी
भेल 'हलो-हाय'
कॉफी आ चाय

हम चाहैत रही
बेटाक बाप वला गंभीरताक संग
बैसल रही सोफा पर, चिबबैत रही पान
टोकला पर 'हँ-न' मे दैत रहीं उत्तर
अपन कौतुक-प्रिय कवि केर धयने रही टांग

मुदा से सभ कहाँ भऽ सकल
भऽ गेलहुँ ठाढ़
देखऽ लगलहुँ
डायनिंग टेबुलक व्यंजन-विन्यास

विचलित कऽ देलक सभ संकल्पकेँ
माछ-भात-तरुआ
बड़ी-बड़ा-चर्चरी आ 'शिमला' केर भरुआ
खीर-सकरौरी पर चल गेल ध्यान
भेल कोना आबि गेल मिथिला एहिठाम
कोना 'कन्टीनेंटल डिश' वला एहि देशमे रहियो कए
मैथिलक मोन पर
रहैत छनि तिलकोर लतरल
मिथिलासँ बाहर आबि
मिथिला कोना पसरल ☐

रचनाकाल : न्यूयार्क, 11 जुलाइ 2002
* दक्षिणी अफ्रीकी अश्वेत

यू.एन.ओ.मे यात्रीजीकेँ स्मरण करैत

'न्यूयार्क हार्बर'क 'लिबर्टी'-द्वीपक लेल विदा होइत छी
दूरहिसँ देखाइ पड़ैत अछि
मुक्ति-शक्ति-स्वतंत्रताक अधिष्ठात्री
मसाल-हस्ता देवी लिबर्टीक गगनचुम्बी प्रतिमा
मुहँसँ बहराइत अछि -'दोहाइ हे लिबर्टी मैया'

पत्नी टोकैत छथि
एतहुँ अहाँ लऽ अनलियनि यात्रीजीकेँ
मास्कोकेँ मोड़ि देलियैक वाशिंगटन दिस
'पर्सियन गल्फ'केँ गोंति देलियैक 'एटलांटिक'मे

नहि-नहि हुनके प्रेरणासँ
हम आयल छी एहि वैभव-विभ्रान्त देशमे
अपन अरबा-चाउर-बतासा 'लेडी लिबर्टी'केँ चढ़ाबऽक लेल
बिता आबऽ राति
'जेक्सन हाईट'क एशियन बन्धुक संग
'टाइम्स स्क्वायर, 'फिफ्थ एवेन्यू'मे
कऽ आबऽ 'एटलांटिक'मे स्नान
खा आबऽ 'लिटिल इण्डिया'सँ पान

हम पहुँचैत छी संयुक्त राष्ट्रसंघ
देखैत छी 'शो-केस'मे यात्रीजीकेँ बन्न
करैत एकसरे सौंसे एशियाक दारिद्र्यक प्रतिनिधित्व
पोछैत एब्राहम लिंकन केर नोर
पाड़ैत मार्टिन किंग लूथरकेँ सोर
देखैत 'ट्विन-टावर'क सारा, बहवैत करुणाक धारा

हम ध्यानमगन रहि जयतहुँ नहि जानि कतेक काल
मुदा पत्नी आबि कहलनि-
खलिया 'शो-केस'मे की देखि रहल छियैक
बाहरमे कखनसँ अजय अछि ठाढ़ □

रचनाकाल : न्यूयार्क, 11 जुलाइ 2002

आधुनिक मिथिलाक जीवनकेँ कवि कीर्त्तिनारायण मिश्र आत्मीय आ भावनात्मक स्पर्श दैत छथि आ तकरा काव्य-प्रतिमानमे ढारि अभिव्यक्तिक सम्मोहक चित्र खिंचैत छथि। ई सम्मोहन हुनक विशाल पाठक-वर्गकेँ हुनक कविता सँ सदति जोड़ने-बान्हने रहैत छनि।

मनुष्यक जीवन लेल घातक कोनो पाखंड, छल-प्रपंच आ षड्यंत्रकेँ ओ हरेक स्तर पर अस्वीकार करैत आम जनजीवनक लेल एक नव मानक केर स्थापना लेल जोर दैत छथि। सुदीर्घ काव्यानुभवसँ भरल ओ विपुल-सृजन कए सकलाह अछि आ कविताकेँ एक समचाजल आ ठोस धरातल प्रदान करबा मे सफल भेलाह अछि।

जीवनक छोट-छोट चीजकेँ ओ अपन गहन काव्यात्मक दृष्टियेँ देखलनि अछि आ तकरा अभिव्यक्त कए आबय वला पीढ़ी लेल एक स्वस्थ- सृजनोन्मुख परम्पराक स्थापना कयलनि अछि। हुनक कविता आ काव्य-विषयक विविधता, हुनक तलस्पर्शी जीवन-बोध, हुनक अनुभवसम्पन्नता मैथिली कविताकेँ बहुआयामी आ धारदार बनौलक अछि। नव सँ नव आ महत्वपूर्ण प्रयोग कए ओ अपन काव्यात्मक-उत्कर्ष प्राप्त करबामे सक्षम रहलाह अछि।

केदार कानन